11वां अंक

अन्नम्

भारतीय खाद्य निगम

आंचलिक कार्यालय (दक्षिण) चेन्नई

09.02.2024 को नराकास (उपक्रम) चेन्नई द्वारा आयोजित हिंदी नाटक प्रतियोगिता में श्रीमती जेसिंता लासरस, भा.प्र.से. नराकास अध्यक्ष महोदया का अभिभाषण

नराकास (उपक्रम) चेन्नई की अध्यक्ष महोदया को ए.ए.आई के द्वारा 09.02.2024 को हिंदी नाटक प्रतियोगिता में स्मृति चिन्ह प्रदत्त

टेकड़ी (केरल) में दिनांक 04.11.2023 को दक्षिणांचल के कार्यालय प्रमुखों के लिए विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन

अन्नम्

(ई-पत्रिका)

राजभाषा हिंदी प्रसार पत्रिका वर्ष 2023 / 11वां अंक

मुख्य संरक्षक
जेसिंता लासरस,भा.प्र.से.
कार्यकारी निदेशक(दक्षिण)

संरक्षक
शैनी विल्सन
महाप्रबंधक (राजभाषा/सा.)

मुख्य संपादक
डॉ. ए.वी.राव
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादक
आनंद प्रसाद नोनियॉ
प्रबंधक (राजभाषा)

सह संपादक
जया जयसवाल, सहायक श्रेणी-II (राजभाषा)
संदीप प्रसाद, सहायक श्रेणी-III (राजभाषा)

(पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता का दायित्व स्वयं रचनाकारों का है। रचनाओं की मौलिकता के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं। निःशुल्क तथा निजी वितरण हेतु प्रकाशित।)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	लेखक श्री/श्रीमती/सुश्री	पृष्ठ सं.
1	गांधी जी के सिध्दांतों की प्रासंगिकता	राजेश साहा	14-16
2	महिला सशक्तिकरण	सुमन सिंह	17-19
3	मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है,लेकिन हर जगह जंजीरों में जकड़ा होता है	निर्मल एन	19-20
4	छठ पूजा	मनीष कुमार यादव	20-21
5	दौषी कौन?	सूर्या एस	22-23
6	मायका	आरती	23-24
7	एक कविता हर माँ के नाम	कैलाश कुमार सिंह	25
8	आखिर हम ही क्यूँ हैं	ऐश्वर्या लक्ष्मी	25
9	राजभाषा अधिकारी कौन है	लोकेश कुमार शाह के आर	26
10	खाद्य सुरक्षा दिवस	प्रदीप कुमार निराला	27
11	भारत में पर्यटन	आर कलीमुथु वेंकटेश	27-28
12	विश्वास	सुबोध कुमार पोद्दार	28
13	भारतीय कृषि :समस्याएँ और समाधान	आकृति सक्सेना	29-30
14	मैं बैठी हूँ	शालिनी राजू	31
15	अन्त स्वर	भानू प्रताप सिंह	31
16	कदम उठा और चले चल तू	गुड्डू कुमार राणा	32
17	खुद से भी मिला कीजिए	सिरी बाला ए	32
18	कार्यालय में भ्रष्टाचार	पंकज सिंह	33-34
19	गृह लक्ष्मी	अंशु प्रिया	35-37
20	यादें	गुड्डी साव	38
21	नौकरी	सुकिर्ति कुमारी	38
22	हिन्दी की पहचान	राज किशोर पंडित	39
23	तपा हुआ कलाकार	मनोज कुमार साव	39
24	उपभोगतावाद की हकीकत दर्शाती पोस्ट	गुँजन कुमार	40-41
25	भारत की विदेश नीति	नवीन कुमार चौबे	42-43
26	खुद को एकांत पाता हूँ	एम.बी.के.सुमन	44
27	मैं हूँ	आनन्द वि	44
28	सफलता की तलाश	अश्वती डी.डी	45-46
29	प्रकृति संरक्षण	शे.सिन्हाज नूरिया	47-48
30	सच्ची भक्ति	एस.भाग्यलक्ष्मी	49

31	किस्मतों के हाथ	सुबोध कुमार चौपाल	50
32	माँ से बेटी तक	अ.दिनेश प्रभु	50
33	साहित्य सृजन में भारतीय अनुवाद की प्रक्रिया	मनीष कुमार साव	51-53
34	राजभाषा हिंदी की वर्तमान स्थिति एवं संघर्ष	विकास प्रसाद वर्मन	54-56
35	संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण की झलकियां	-	57-59
36	हिंदी कार्यशाला 2023-24 की झलकियां	-	60-66
37	आंचलिक कार्यालय (द) चेन्नई की गतिविधियां	-	67-68

कार्यालय पता :
भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय(दक्षिण)
सं.3, हॉडोस रोड, नुंगमबाक्कम, चेन्नई - 600006
ई-मेल : agmhindisz.fci@gov.in

अनुच्छेद 343. संघ की राजभाषा

1. संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

अशोक के. के. मीना, भा.प्र.से
अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक
ASHOK K. K. MEENA, IAS
Chairman & Managing Director

Azadi Ka Amrit Mahotsav
भारतीय खाद्य निगम
FOOD CORPORATION OF INDIA

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (दक्षिण), चेन्नई राजभाषा हिंदी गृह पत्रिका "**अन्नम**" के 11वें अंक का प्रकाशन कर रहा है।

भारतीय खाद्य निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी भाषा के प्रति लगाव तथा अनुराग पैदा करने के उद्देश्य से "**अन्नम**" हिंदी पत्रिका का प्रकाशन, राजभाषा हिंदी की प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है और यह अत्यंत गौरव का विषय है कि "**अन्नम**" का प्रकाशन निरंतर एक दशक से सफलतापूर्वक हो रहा है। वैश्वीकरण के इस दौर में भाषाओं की अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका है और देश में इस भूमिका को हिंदी ही निभा सकती है। साथ ही यह पत्रिका कार्यालय के कामकाज में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रही है।

इस पत्रिका में जीवन के विविध क्षेत्रों से जुड़ी रचनाओं को शामिल किया गया है और वे सभी कार्मिक बधाई के पात्र हैं जिन्होंने प्रकाशित लेखों, रचनाओं एवं कविताओं के माध्यम से अपने विचारों और ज्ञान को साझा किया है।

मेरी ओर से राजभाषा गृह पत्रिका "**अन्नम**" के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकमनाएं।

(अशोक के. के. मीना)

16–20, बाराखम्बा लेन, नई दिल्ली–110001, दूरभाष : +91-11-23414074, 23413346, फैक्स : +91-11-23413214, ई–मेल : chairman.fci@gov.in
16-20, Barakhamba Lane, New Delhi - 110001, Office: +91-11-23414074, 23413346, Fax: +91-11-23413214, E-mail: chairman.fci@gov.in

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (दक्षिण) चेन्नई के द्वारा राजभाषा गृह पत्रिका **"अन्नम"** के 11 वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। पत्रिका का प्रकाशन निरंतर हो रहा है, यह एक सराहनीय प्रयास है। इस पत्रिका के प्रकाशन से अधिकारियों/कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति रूचि बढ़ेगी। अधिकारियों/कर्मचारियों तथा उनके आश्रित परिवार के सदस्यों द्वारा भी इस पत्रिका में अपना योगदान दिया गया है। सभी रचनाकारों के सृजनात्मक प्रतिभा को इस पत्रिका में देखा गया है तथा कार्यानुभव को भी व्यक्त किया गया है। आंचलिक कार्यालय (दक्षिण) से इस पत्रिका के प्रकाशन के उपरांत राजभाषा के प्रचार-प्रसार में वृद्धि अवश्य होगी। इस प्रकार के सृजनात्मक कार्य से अधिकारियों/कर्मचारियों का मनोबल अवश्य बढ़ता है।

राजभाषा कार्यान्वयन में **"अन्नम"** पत्रिका बहुत ही सहायक सिद्ध होगी। इसी आशा व विश्वास के साथ पत्रिका के संपादक मंडल व इससे जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

जेसिंता लासरस

जेसिंता लासरस, भा.प्र.से.
कार्यकारी निदेशक (दक्षिण)

संदेश

यह बहुत ही हर्ष का विषय है कि भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (दक्षिण), चेन्नई द्वारा राजभाषा गृह-पत्रिका **"अन्नम"** के 11 वें अंक का प्रकाशन हो रहा है। जिसमें दक्षिणांचल के कार्यालयों में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों की सृजनात्मक प्रतिभा को देखने का अवसर प्राप्त होगा। राजभाषा कार्यान्वयन सरकारी संस्थायों की संवैधानिक जिम्मेदारी है और इसके निर्वहन में यह कार्यालय अग्रसर है। पत्रिका प्रकाशन से अधिकारियों/कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति रूचि में वृद्धि होगी एवं राजभाषा के क्षेत्र में अधिक से अधिक सहायक सिद्ध होगी।

दैनंदिन कार्यों में राजभाषा का कार्यान्वयन होता रहे और राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,भारत सरकार के दिए गए लक्ष्यों के प्रति समर्पित भावना से कार्यों का निर्वहन किया जाए।

सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से यह अपील है कि अपने काम में राजभाषा हिंदी का प्रयोग अवश्य करें।

"अन्नम" के 11 वें अंक के प्रकाशन से जुड़े समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें ।

(शेख कमाल साहेब)
मुख्य महाप्रबंधक (दक्षिण)

संदेश

यह अत्यंत ही खुशी की बात है कि भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (दक्षिण), चेन्नई द्वारा विगत एक दशक से लगातार राजभाषा गृह-पत्रिका **"अन्नम"** का प्रकाशन हो रहा है। इस बार इस पत्रिका के 11 वें अंक में सामाजिक, साहित्यिक विषयों के साथ ही साथ अधिकारियों/कर्मचारियों के बच्चों के द्वारा पेंटिंग्स को भी स्थान दिया गया है।

सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अथक प्रयास से इस कार्यालय ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है। कार्यालय में अब ई-ऑफिस आरंभ हो चुका है और सभी कार्मिकों के द्वारा ई-ऑफिस पर काम किया जा रहा है तथा हिंदी टिप्पणी के लक्ष्य प्राप्त करने के उपरांत इसमें लगातार वृद्धि हो रही है। राजभाषा कार्यान्वयन के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि समस्त कार्मिकों को मिलकर एक साथ टीम वर्क के रूप में कार्य करना चाहिए और कार्यालय का नाम रौशन करते रहना चाहिए।राजभाषा गृह पत्रिका **"अन्नम"** के 11 वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

(शैनी विल्सन)
महाप्रबंधक (राजभाषा/सा.)

संदेश

यह बहुत गर्व की बात है कि भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (दक्षिण), चेन्नई की राजभाषा गृह पत्रिका **"अन्नम"** का प्रकाशन निरंतर प्रवाहमान गति से हो रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में पत्रिका सहायक सिद्ध होती है। भाषा मनुष्य की संवेदना की अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम सशक्त माध्यम होती है। पत्रिका के माध्यम से रचनाकारों ने अपने विचारों तथा संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का सार्थक प्रयास किया है।

"अन्नम" पत्रिका में दक्षिणांचल के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों तथा उनके आश्रित परिवार के सदस्यों की लेखनी, पेंटिंग्स आदि सम्मिलित हैं।

आशा है कि भारतीय खाद्य निगम, दक्षिणांचल के समस्त कार्मिकों का प्रयास राजभाषा के प्रति निरंतर इसी प्रकार होता रहेगा।

(राजेश कुमार)
महाप्रबंधक (सामान्य)

संदेश

यह बहुत ही खुशी की बात है कि भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (दक्षिण), चेन्नई की राजभाषा गृह पत्रिका **"अन्नम"** के 11 वें अंक का प्रकाशन प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी हो रहा है। गृह पत्रिका के प्रकाशन से राजभाषा के कार्यों में गति मिलेगी और अधिकारियों/कर्मचारियों की रूचि में वृद्धि होगी। पत्रिका का प्रकाशन कार्मिकों को अपनी सृजनात्मक प्रतिभा को उजागर करने का एक अवसर प्रदान करता है, जिससे राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की प्रगति भी सुनिश्चित की जा सकती है ।

पत्रिका से जुड़े सभी कार्मिकों के साथ ही साथ संपादक मंडल को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

(राजेश साहा)
महाप्रबंधक (लेखा)

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत खुशी हो रही है कि भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (दक्षिण), चेन्नई की राजभाषा गृह पत्रिका **"अन्नम"** का प्रकाशन हो रहा है साथ ही इस पत्रिका ने अपने एक दशक पूरे कर लिए हैं, इसके लिए मैं समस्त संपादन मंडल को शुभकामनाएं अर्पित करता हूँ। पत्र-पत्रिकाएं किसी भी कार्यालय का दर्पण होती हैं, जिसमें अधिकारियों/कर्मचारियों की भावनाएं तथा कार्यशैली प्रतिपादित होती हैं। राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में पत्रिका का प्रकाशन करना एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

हिंदी देश की राजभाषा, राष्ट्रभाषा एवं संपर्क भाषा है जो भारत को विभिन्न प्रदेशों से जोड़ती है। आंचलिक कार्यालय (दक्षिण) के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पत्रिका प्रकाशन हेतु बधाई देता हूँ।

(मो.जकरूद्दीन)
महाप्रबंधक (विधि)

संदेश

यह अत्यंत ही हर्ष का विषय है कि आंचलिक कार्यालय (दक्षिण) चेन्नई की गृह पत्रिका **"अन्नम"** का प्रकाशन हो रहा है। राजभाषा गृह पत्रिका का प्रकाशन कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की रचनाधर्मिता को प्रदर्शित करता है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका बहुत ही सहायक सिद्ध होगी।

मैं इस पत्रिका के माध्यम से सभी पाठकों से यह अनुरोध करना चाहता हूँ कि जितना अधिक से अधिक हो सके उतना राजभाषा में निः संकोच काम करें, इससे कार्यालय का राजभाषायी लक्ष्य तो पूरा होगा ही साथ ही साथ अपना विकास भी होगा। हिंदी में कार्य करने से कार्यालय का वातावरण भी पुष्पित एवं पल्लवित होता रहेगा।

सभी रचनाकारों के साथ ही साथ संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

अमित

(अमित रूज)
महाप्रबंधक (लेखा)

संदेश

यह बहुत ही प्रसन्नता का विषय है कि भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (दक्षिण), चेन्नई की राजभाषा गृह पत्रिका **"अन्नम"** के 11 वें अंक का प्रकाशन हो रहा है। पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा की प्रगति एवं प्रसार में एक सफल कदम है। किसी भी कार्यालय के द्वारा हिंदी में पत्रिका प्रकाशन राजभाषा कार्यान्वयन में एक विशेष उपलब्धि है। भारतीय संविधान के द्वारा हिंदी को देश की राजभाषा होने का गौरव प्राप्त हुआ है। हिंदी में काम करना आसान है, बस इसकी शुरूआत सकारात्मक रूप से करनी है।

राजभाषा के विकास में पत्रिका प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इस पत्रिका में समाहित सभी रचनाओं,गतिविधियों आदि की मैं सराहना करना हूँ।

आशा करता हूँ कि भारतीय खाद्य निगम, दक्षिणांचल के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के द्वारा इस प्रकार का प्रयास निरंतर जारी रहेगा।

पत्रिका प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

संजीव कु. भदानी

(संजीव कुमार भदानी)
महाप्रबंधक (सामान्य)

संदेश

यह बहुत ही गर्व और गौरव का विषय है कि भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (दक्षिण), चेन्नई की राजभाषा गृह पत्रिका **"अन्नम"** के 11 वें अंक का प्रकाशन लगातार हो रहा है। राजभाषा नियम 1976 के अनुसार तमिलनाडु "ग" क्षेत्र के अंतर्गत आता है और "ग" क्षेत्र में राजभाषा के कार्यान्वयन में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि राजभाषा गृह पत्रिका **"अन्नम"** भारतीय खाद्य निगम में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों को अपनी सृजनात्मक प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए एक उचित मंच प्रदान करेगी।

"ग" क्षेत्र में राजभाषा पत्रिका का प्रकाशन होना गौरव की बात है। अपनी रचनाओं के माध्यम से हिंदी के कार्यान्वयन में अपना योगदान देनेवाले सभी रचनाकारों को बधाई देता हूँ।

संपादन मंडल को पत्रिका प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं।

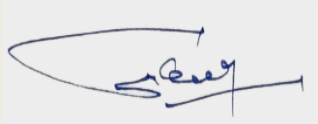

(जयदीप कच्छप)
महाप्रबंधक (सामान्य)

संदेश

भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय (दक्षिण), चेन्नई की राजभाषा गृह पत्रिका **"अन्नम"** के 11 वें अंक का प्रकाशन हो रहा है, यह अत्यंत ही गर्व की बात है। पत्रिका के इस अंक में निगम के कार्यकलापों से संबंधित रचनाओं, लेखों के साथ ही साथ पेंटिग्स को भी स्थान दिया गया है। राजभाषा की गतिविधियों को भी इस पत्रिका में प्रकाशित किया जा रहा है, पत्रिका सम्पूर्ण रूप से सभी पैमाने पर सटीक बैठती है और राजभाषा के कार्यान्वयन में अवश्य सहायक सिद्ध होगी।

राजभाषा की प्रगति इस बात पर निर्भर करती है कि कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के द्वारा हिंदी में काम किया जाए। सभी रचनाकारों को बधाई देता हूँ और पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं अर्पित करता हूँ।

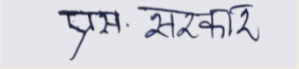

(सुशील सरकार)
महाप्रबंधक (इंजिनियरिंग)

संदेश

राजभाषा हिंदी राष्ट्रीय एकता, संस्कृति और संपर्क का सबसे उत्तम माध्यम है। राजभाषा गृह पत्रिका **"अन्नम"** के 11 वें अंक का प्रकाशन इस कार्यालय से हो रहा है, यह बहुत ही खुशी की बात है। हिंदी में काम करना और हिंदी में बोलना सरकारी कामकाज का एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है। राजभाषा हिंदी कार्यालय के कार्यान्वयन में बहुत बड़ी भूमिका का निर्वहन करती है। **"अन्नम"** का प्रकाशन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों में सुअवसर प्रदान करेगा और अधिक से अधिक कार्मिकों के द्वारा पत्रिका में अपना योगदान दिया जाएगा।

मैं **"अन्नम"** पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु आंतरिक हृदय से शुभकामनाएं देता हूँ। राजभाषा का इसी प्रकार प्रचार और प्रसार होता रहे एवं कार्यालयीन कार्यों में इसकी भूमिका बनी रहे।

(सुरेन्द्र सिंह तक्षक)
महाप्रबंधक (सामान्य)

संदेश

यह बहुत ही खुशी की बात है कि दक्षिणांचल की राजभाषा गृह पत्रिका **"अन्नम"** का प्रकाशन भारतीय खाद्य निगम, आंचलिक कार्यालय, चेन्नई से निरंतर 10 वर्षों से हो रहा है। इस 11 वें अंक में आप सभी को लेख, कविताएं तथा बच्चों की पेंटिंग्स देखने को मिलेगी। आंचलिक कार्यालय के राजभाषा कक्ष के अधिकारियों/कर्मचारियों के द्वारा पत्रिका प्रकाशन में बहुत मेहनत की गयी है और सार्थक चीजों को इस पत्रिका में स्थान दिया गया है। किसी भी कार्यालय के द्वारा हिंदी पत्रिका का प्रकाशन करना एक महत्वपूर्ण कड़ी है। राजभाषा कार्यान्वयन में पत्रिकाओं का अमूल्य योगदान होता है।

इस पत्रिका से जुड़े सभी सृजनात्मक कर्ताओं के प्रति शुभकामनाएं अर्पित करता हूँ साथ ही साथ संपादक मंडल को बधाई देता हूँ।

(कैलाश कुमार)
उप महाप्रबंधक (राजभाषा/सा.)

मुख्य संपादक की कलम से

हिंदी के कार्यान्वयन में पत्रिका प्रकाशन एक महत्वपूर्ण अंग है। पत्रिका प्रकाशन से अधिकारियों एवं कर्मचारियों में न केवल हिंदी ज्ञान बढ़ेगा बल्कि सोचने की शक्ति भी बढ़ेगी। आज-कल तकनीकी का जमाना है, जिससे एक बात तो माननी पड़ेगी कि सोचने की शक्ति बिल्कुल कम हो गयी है। 100 पृष्ठों की पत्रिका एक दिन में छापने की तकनीकी का सामर्थ्य तो आ गया लेकिन एक पन्ना सोचने की शक्ति कम हो गयी।

मेरा यही अनुरोध है कि पत्रिका प्रकाशन के लिए लेख, कविताओं इत्यादि को इंटरनेट से न लेते हुए स्वयं सोचकर लिखने की कोशिश करनी चाहिए। पत्रिका में लेख, कविता इत्यादि राजभाषा कार्यान्वयन से या आजकल के सामाजिक समस्याएं और निवारण पर होने से सभी को लाभ होगा।

तकनीकी अपने जीवन का एक अभिन्न अंग हो गया है और तकनीकी के अलावा आज सांस लेना भी मुश्किल है, इसमें कोई शक नहीं। परंतु तकनीकी के साथ-साथ सामूहिक तौर पर हिंदी में ज्ञान बढ़ना भी नितांत आवश्यक है। गूगल ट्रांसलेशन इत्यादि का प्रयोग नि: संदेह कर सकते हैं लेकिन साथ में हिंदी के ज्ञान को भी बढ़ाना है, अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो जाता है। हमारे पास जितनी भी बड़ी तकनीक का सामर्थ्य क्यों न हो चाहे हमारे पास चार पहिये की गाड़ी हो लेकिन जब तक हमें ड्राइविंग पता नहीं तब तक दुर्घटना होने की संभावना बनी रहती है। इसी प्रकार हर एक आदमी को हिंदी में तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ हिंदी में ज्ञान बढ़ाने की आवश्यकता है। गूगल पर पूरी तरह निर्भर नहीं रहना है बल्कि अपने ज्ञान की वृद्धि करनी आवश्यक है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका के रचनाकारों के द्वारा भविष्य में भी पत्रिका प्रकाशन में सहायता मिलती रहेगी। राजभाषा गृह पत्रिका **"अन्नम"** के 11 वें अंक में अपना योगदान देनेवाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ और पत्रिका की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(डॉ ए.वी.राव)
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

संपादकीय

सर्वप्रथम आप सभी को मेरा सादर अभिनंदन- राजभाषा गृह पत्रिका **"अन्नम"** के माध्यम से आप सभी से जुड़ने का यह मेरा पहला अवसर है। **"अन्नम"** के 11 वें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

एक कहावत के अनुसार **" कोस-कोस पर पानी बदले, चार कोस पर वाणी"** अर्थात् हमारे देश में हर एक कोस की दूरी पर पानी का स्वाद बदल जाता है और चार कोस पर वाणी अर्थात् भाषा भी बदल जाती है, ऐसा देश है मेरा। भारत विविधता में एकता तथा बहुभाषा-भाषी देश है। यहाँ की धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक पृष्ठभूमि अत्यंत ही महत्वपूर्ण स्थान रखती है। भौगोलिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो भारत के तीन तरफ समंदर है, लेकिन इसके बावजूद 32,87,263 वर्ग कि.मी. में फैला भारत अपनी भुजाएं फैलाता हुआ पूरे विश्व को अपनी ओर आकर्षित किए हुए है। विश्व के कई देश अपने ब्रांड बेचने के लिए हिंदी भाषा का ही प्रयोग कर रहे हैं। विज्ञापन से लेकर हॉर्डिंग तक हिंदी में दिख रहे हैं, इसमें **बुलंद भारत की बुलंद तस्वीर** देखी जा सकती है। भारत में कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी और कच्छ से लेकर कोहिमा तक राजभाषा, राष्ट्रभाषा तथा संपर्क भाषा हिंदी का परचम लहरा रहा है।

भारतीय खाद्य निगम, आँचलिक कार्यालय (दक्षिण) चेन्नई की राजभाषा गृह पत्रिका **"अन्नम"** अपने 11 वें अंक के साथ नए कलेवर सहित पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। इस पत्रिका में निगम के अधिकारियों/कर्मचारियों के द्वारा रोचक आलेख, कविताएं, राजभाषा संबंधी गतिविधियां, पेंटिग्स आदि का समावेश है।

किसी भी कार्यालय में राजभाषा के कार्यान्वयन का मार्गप्रशस्त तब तक नहीं हो सकता जब तक उस कार्यालय के कार्यालय प्रमुख व वरिष्ठ अधिकारियों का मार्गदर्शन प्राप्त न हो। इस दिशा में कार्यकारी निदेशक (दक्षिण) महोदया तथा सभी वरिष्ठ अधिकारियों का मार्गदर्शन व महत्वपूर्ण सहयोग सदैव प्राप्त होता रहा है, जिसका प्रमाण यह है कि यह पत्रिका लगातर एक दशक से प्रकाशित हो रही है।

सभी प्रबुद्ध रचनाकारों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने अपने लेखन से इस पत्रिका को सुशोभित किया है। अपनी हिंदी के लिए दो शब्द कहना चाहूँगा:-

"देश की सभी भाषाएं हैं, भारत माँ का गहना, कोई हीरा, कोई मोती, कोई सोने की गिन्नी।

पर भारत माँ के भाल पर चमक रही है जो बिंदी वह है अपनी हिंदी- वह है अपनी हिंदी।।"

पत्रिका में सहयोग हेतु आप सभी का आंतरिक हृदय से धन्यवाद ।

(आनंद प्रसाद नोनियाँ)
प्रबंधक (राजभाषा)
भा.खा.नि., आं.का.,चेन्नई

राजेश साहा
महाप्रबंधक (वित्त /लेखा)
आंचलिक कार्यालय (दक्षिण)

गाँधी जी के सिद्धांतों की प्रासंगिकता

हम सब जानते हैं कि गाँधी जी के तीन सिद्धांत थे-

1) **बुरा नहीं देखना**

2) **बुरा नहीं सुनना** और

3) **बुरा नहीं कहना।**

इन तीन सिद्धांतों को गाँधी जी के तीन बंदरों के तस्वीर के द्वारा समझा जा सकता है। एक की आंख बंद है, दूसरे की कान और तीसरे की मुँह बंद है।

गाँधी जी ने यह कभी नहीं कहा था कि आपके सामने यदि कुछ बुरा हो तो आंखे बंद कर लें बल्कि उनका

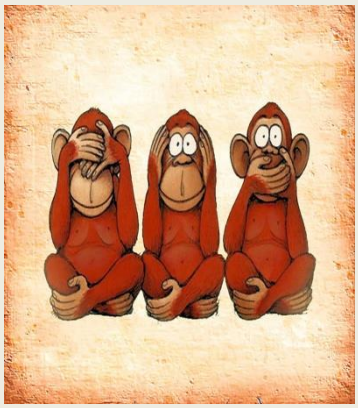

संदेश था कि उसका डटकर मुकाबला किया जाए। क्या उन्होंने अंग्रेज के जुल्म के खिलाफ कभी आंखें बंद की। लेकिन समाज में ऐसा देखा जाता है कि किसी भी अत्याचारी या दुराचारी के द्वारा जब किसी आमजनता का शोषण किया जाता है तो अधिकतर सक्षम लोग उसे देखकर भी अपनी आंखे बंद कर लेते हैं। क्या यह गाँधी के सिद्धांत की हत्या नहीं है?

लोग उस शोषण के विरूद्ध चुप रहते हैं, उसका विरोध और प्रतिवाद नहीं करते हैं । क्या गाँधी जी का तीसरा बंदर जिसका मुँह बंद है, उसका यही संदेश है। क्या शोषण के विरूद्ध चुप रहकर, उसका विरोध और प्रतिवाद नहीं करके, क्या हमलोग गाँधी के सिद्धांत की हत्या नहीं कर रहे हैं ?

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने अन्याय सहने और उसका विरोध न करने पर बहुत ही अच्छी पंक्ति लिखी है:-

“अन्याय सहकर बैठ रहना यह महा दुष्कर्म है,
न्यायार्थ अपने बंधु को भी दंड देना धर्म है।”

जब शोषण होता देख हम उसपर अपनी आवाज बुलंद नहीं करते हैं तो क्या गाँधी जी के सिद्धांतों की हत्या नहीं होती । क्या गाँधी जी ने इसी भारत का स्वप्न देखा था ?

ये प्रश्न मैं आप सभी पाठकों के विवेक पर छोड़ता हूँ।

आज हमारे नेता खादी और टोपी तो पहन लेते हैं और अपने कर्मकांडों को खादी और टोपी में छूपा भी लेते हैं, क्या उस वक्त गाँधी के सिद्धांतों की हत्या नहीं होती ?

जब कोई भ्रष्टाचार करता है रूपये पर छपे हुए गाँधी जी के नोटों के साथ कालाबाजारी करता है क्या उस वक्त गाँधी के सिद्धांतों की हत्या नहीं होती ?

क्या गाँधी जी ने इसी भारत की कल्पना की थी ?

सच है कि गोडसे ने गाँधी जी को मारा परंतु गोडसे गाँधी जी के विचारधारा की हत्या करने में सफल नहीं हो पाया, यदि ऐसा होता तो आज हम गाँधी जी के विचारधारा को याद नहीं कर पाते। परंतु मैं पाठक से पूछना चाहता हूँ कि क्या आज गाँधी जी के विचारधारा की हत्या नहीं हो रही है।

क्या 26 जनवरी, 15 अगस्त और 02 अक्टूबर को केवल गाँधी जी को याद कर लेने से गाँधी जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजली हो जाती है।

गाँधी जी के सिद्धांतों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजली तब होगी जब हम सब उनके विचारों को अपने अंदर ग्रहित कर लें। हमलोगों को गाँधी जी की को समझना होगा। हमें दूसरे धर्मों का सम्मान करना होगा, आपसी भाई-चारे को निभाते हुए गंगा जमुनी तहजीब को निभाना होगा।

हिंदी के प्रसिद्ध कवि कबीरदास जी कहते हैं:-

" मोकों कहाँ ढूँढे बंदे, मैं तो तेरे पास में।

ना मैं देवल ना मैं मस्जिद, ना काबे कैलास में।।"

मनुष्य ईश्वर को पाने के लिए तरह-तरह के क्रिया-कर्म करता है, परन्तु उसे ईश्वर के दर्शन नहीं होते हैं। कबीर के अनुसार स्वयं निराकार ब्रह्म मनुष्य से कहते हैं कि हे मनुष्य ! तुम मुझे ढूँढने के लिए कहाँ-कहाँ भटक रहे हो। मैं किसी मंदिर-मस्जिद में तुम्हें नहीं मिलूँगा और न किसी तीर्थस्थान पर। जो मुझे सच्चे मन से खोजता है, उसे मैं तुरंत मिल जाता हूँ क्योंकि मैं तो प्रत्येक प्राणी की हर साँस में बसा हूँ। ठीक उसी प्रकार अपने मन, मस्तिष्क को सकारात्मक रखते हुए अपने लक्ष्यों के प्रति निरंतर अग्रसर रहना है।

आपको सबसे पहले अपने आप को पहचानना चाहिए। आप कौन हैं? आप क्या है? आप क्या कर सकते हैं? जब आप अपने आप को पहचान लेंगे तब सब कुछ ठीक हो जाएगा।

किसी भी घटना को देखते हुए आप मूकदर्शक मत बने रहिये बल्कि उसका प्रतिवाद कीजिए तभी गाँधी जी के सपनों का भारत पूरी दुनिया में परचम लहरायेगा। हमें किसी भी गलत कार्य का समर्थन नहीं करना चाहिए। जब तक आप अपने से ईमानदार नहीं होगें तब तक आप दूसरों से इसकी अपेक्षा नहीं रख सकते हैं।

शासन (अधिकारी) और शासक (नेता) सभी को ईमानदारी पूर्वक अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना होगा। आम मतदाता अपने मत का सदुपयोग कर एक अच्छे और सच्चे नेता का चुनाव करता है तो अवश्य ही देश का विकास होगा। मतदाता अपने वोट को अपनी निहित स्वार्थ के लिए ना बेचें बल्कि अगले 05 (पाँच) वर्षों के लिए देशहित को ध्यान रखते हुए अपने और अपने बच्चों के भविष्य हेतु अपने मत के साथ न्याय करे और अपने लोकतांत्रिक अधिकार का प्रयोग कर एक सही और सार्थक नेता का चुनाव करें।

गाँधी जी के विचारों के अंतर्गत सत्य और अहिंसा के पथ पर हम सब चलकर उनके सिद्धांतों को जीवित रख सकते हैं। यही हमारी गाँधी जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजली होगी, तभी गाँधी जी के सिद्धातों की प्रासंगिकता बरकरार रहेगी।

सुमन सिंह
सहायक श्रेणी-II (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, चेन्नई

महिला सशक्तिकरण

"यत्रनार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता"

अर्थात

जहां नारी का सम्मान होता है वहां देवता निवास करते हैं।

एक महिला को खुश रहने का, जानने का एवं उसके अपने जीवन को प्रभावित करने वाले मामलों को चुनने का अधिकार हैं। उसे यह भी अधिकार है कि अपने शरीर से संबंधित उसके विचारों का सम्मान किया जाए। परिवार समाज में उसकी स्थिति का सम्मान किया जाए। एक सशक्त महिला गुलामी से आजाद होती है। परिवार, समाज एवं राष्ट्र द्वारा किए जाने वाले मानसिक, शारीरिक एवं नैतिक शोषण से वह स्वतंत्र होती है। उसे यह अधिकार होता है कि वह अपनी इच्छानुसार पूर्णत: अपना आध्यात्मिक, सामाजिक, बौध्दिक, कलात्मक एवं राजनीतिक विकास कर सके।

आज उस युगों पुरानी पुरूषवादी सामाजिक सोच को चुनौती देने की आवश्यकता है जो महिलाओं को पुरूषों की तुलना में कम महत्व देती हैं। सैकड़ों वर्षों से उसे मूलभूत मानवीय, सामाजिक एवं राजनीतिक अधिकारों से वंचित रखा गया है। अब समाज किसी तरह भी इन वृत्तियों, प्रथाओं एवं व्यवहार को सही नहीं बता सकता है। समझदारी की इस कमी के कारण हमारी सभ्यता पीड़ित रही है और उसे हानि उठानी पड़ी है। मूल्यों एवं आध्यात्मिकता का यह पाठ्यक्रम यह स्थापित करना चाहता है कि संसार में संतुलन कायम करने के लिए सशक्त महिलाओं की आवश्यकता है।

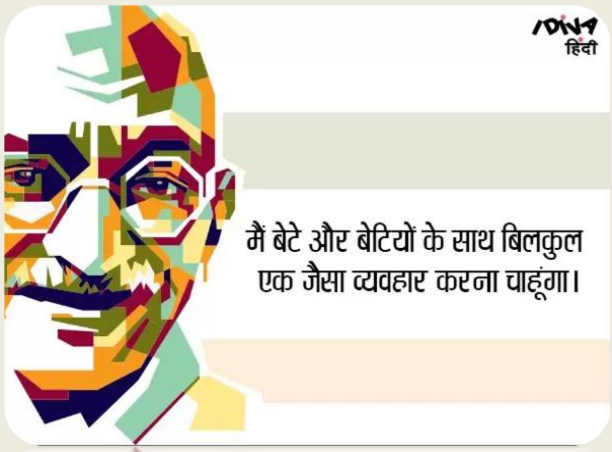

"महिलाओं के अधिकारों के मामले में मैं कोई समझौता नहीं कर सकता। मैं ऐसा मानता हूँ कि महिलाओं को ऐसी कोई कानूनी रूकावट नहीं होनी चाहिए जो पुरूषों को नहीं झेलनी पड़ती है। जब तक भारतवर्ष की

महिलाएं पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर धार्मिक, राजनीतिक एवं सांसारिक मामलों में बराबरी से अपनी भूमिका का निर्वाह नहीं करती हैं तब तक भारतवर्ष के भाग्य का उदय नहीं हो सकता है।" – महात्मा गांधी

महिला सशक्तिकरण की नीति का उद्देश्य महिलाओं की उन्नति, विकास तथा सशक्तिकरण को मूल रूप देना है । महिला के लिए एक ऐसा माहौल तैयार हो जिससे वह अपनी क्षमताओं को समझ सकें। सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक जीवन में महिलाओं द्वारा भागीदारी और निर्णय क्षमता का समान अवसर हो स्वास्थ्य देखभाल, गुणवतापूर्ण शिक्षा, करियर तथा रोजगार, समान वेतन, सामाजिक सुरक्षा आदि में समान अवसर की उपलब्धता महिलाओं को प्राप्त हो ।

अब प्रश्न यह है कि हमारे समाज में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता क्यों पड़ी ?

नेहरू जी ने कहा था -**"लोगों को जगाने के लिये महिलाओं का जागृत होना जरूरी है।"** हमारे देश भारत के बहुत से ऐसे इलाके है जहां समाज में महिलाओं को उचित अधिकार व सम्मान नही दिया जाता । उन्हें प्रत्येक दृष्टि से पुरूषों से कम ही आंका जाता है। इसीलिए हमें महिला सशक्तिकरण की अति आवश्यकता है । महिला के प्रति होने वाले अन्याय शोषण और असमानता को दूर करने हेतु नारियों को सशक्त करना समाज की प्रथम आवश्यकता है । इसके अंतर्गत महिलाओं को जरूरी कानूनी सुरक्षा भी प्रदान की जानी है ।

"नारी जब सशक्त बनेगी

विकास की लहर चलेगी।"

पूरे विश्व में 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। हरिशंकर परसाई जी के व्यंग्य की पंक्ति है कि **"दिवस कमजोरों के मनाए जाते हैं, मजबूत लोगों के नहीं।" सशक्त होने का आशय केवल घर से बाहर निकल कर नौकरी करना या पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर चलना भर नहीं है। सशक्त होने का आशयय हाँ पर उसके निर्णय ले सकने की क्षमता का आधार है कि वह अपने निर्णय स्वयं ले रही है या इसके लिए वह किसी और पर निर्भर है। इसी प्रकार आज आर्थिक रूप से सशक्त होने उसके लिए बहुत आवश्य है। यदि वह आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं है तो वह कभी भी सशक्त नहीं हो सकेगी।"**

महिला सशक्तिकरण के द्वारा महिलाओं के साथ-साथ परिवार के हर सदस्य का विकास सम्भव है। एक महिला परिवार के लिए रीढ़ की हड्डी के समान होती है। जिस घर की महिला सशक्त होगी वो

परिवार अपने आप सशक्त हो जाएगा। जहां के परिवार सशक्त होगें वहां पूरा समाज अपने आप सशक्त हो जाएगा। साथ ही जब महिलाएं शक्तिशाली बनती है । वह अपने जीवन से जुड़े सभी फैसले स्वंय ले सकती है तथा परिवार और समाज में सम्मान के साथ रह सकती है

"नारी स्वाभाव से संवेदनशील होती है. भावनाओं और वृत्तियों के जगत में नारी पुरुष से सदा ही दस वर्ष बड़ी होती है।"- जयशंकर प्रसाद

निर्मल एन
सहायक श्रेणी -III (सामान्य)
मंडल कार्यालय, कोषिक्कोड

मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है, लेकिन हर जगह जंजीरो में जकड़ा होता है।

हरेक सुंदर वस्तु से परिपूर्ण यह साधारण संसार ईश्वर का ही उपहार है। मनुष्य को इस दुनिया में बिना किसी जंजीर में बंधे भेजा गया है चाहे वह किसी भी धर्म, वर्ग, नस्ल और राष्ट्र का हो एक नवजात शिशु एक स्वतंत्र, नश्वर रूप में सांस लेता है। उसकी चेतना इस विचार से मुक्त होती है कि वह गुलाम है या

स्वतंत्र नागरिक एक राजकुमार है या किसी दरिद्र घर में जन्मा अस्तित्व है। चेतना के द्वारा अपने मूल स्वतंत्र को पा लेना ही स्वतंत्रता है। रूसो इस पंक्ति में यह कहना चाहते हैं कि मनुष्य स्वभावतः अच्छा है लेकिन समाज का निर्माण और वहाँ से पैदा हुई संपत्ति और प्रभुत्व की इच्छा ही मानवीय अच्छाई में बाधक बनती है। समय बितने के साथ एक बच्चे की चेतना विकसित होने लगती है फ्रायड ने कहा है कि एक बच्चे को सबसे पहले अधिकार का सामना करना पड़ता है जब उसे स्कूल में समय प्रबंधन और अनुशासन का पालन करना पड़ता है। सामाजिक जीवन की शुरूआत के साथ ही उसे यह समझ आने लगता है कि वह एक स्वतंत्र प्राणी नही है सिर्फ सामाजिक जीवन ही नही वरन् मनुष्य नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, मानसिक और आर्थिक रूपी जंजीरो से जकड़ा हुआ है।

मनुष्य स्वतंत्र पैदा हुआ है लेकिन हर जगह वह जंजीरो में जकड़ा हुआ है यह एक फ्रांसीसी दार्शनिक रूसो का कथन है। रूसो ने अपनी प्रसिद्ध किताब सामाजिक अनुबंध में इस पंक्ति का जीक्र करते हुए कहा है कि लोग स्वतंत्रता की अनुभूति केवल तभी कर सकते है जब मनुष्य समाज में रहते है और नागरिक नियमों का पालन करते है। रूसो का मानना था एक बालक अबोध पक्षपात रहित होता है लेकिन अंततः वह जिस समाज में रहता है, उसके कारण वो अपनी स्वतंत्रता खो देता है, समाज की कुछ जंजीरे उसकी आत्मा को कष्ट पहुँचाती है। और वही कुछ जंजीरे उसे विनाश की ओर बढ़ने से रोकती है।

सामाजिक जंजीरे मनुष्य की चेतना शक्ति को कुंठित कर देती है चाहे वह अनुशासन हो समय प्रबंधन पारिवारिक हित इत्यादि। उदाहरण के लिए महाभारत का अर्जुन है जो इसी सामाजिक जंजीर के कारण पथविच्युत हो गए थे, पारिवारिक संबंधो ने उनको इस तरह मोह माया के पाश में डाल रखा था कि वो अपनी चेतना शक्ति खो बैठे थे।

राजनितिक क्षेत्र में भी मनुष्य कई जंजीरो से जकड़ा है। उत्तर कोरिया, सऊदी अरब, अफगानिस्तान जैसे देशों में कई बुनियादी मानवाधिकारों अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और राजनीतिक असहमति की स्वतंत्रता नही है। पुंजीवादी समाजों में धन और अवसर की असमानता, केंद्रित शक्ति और संशाधन मनुष्यों की स्वतंत्रता को कम कर देती है। शोषण वेतन अंतर और सामाजिक गतिशीलता की कमी आर्थिक जंजीरो में फंसे लोगों के सामने आने वाली चुनौतियों को उजागर करती है।

मनुष्य प्रत्येक स्तर में कोई न कोई धार्मिक जंजीरो से जकड़ा हुआ है। ईश्वर के वास्तिवता को ना मानकर पत्थरों, मूर्तियों, मंदिरों, मस्जिदों, गिरजा आदि में उन्हें ढूंढता है। अपनी चेतना शक्ति उपयोग न करके भौतिकवादी दुनिया में वस्तु के जरिए ईश्वर को प्राप्त करने का जिज्ञासा रखता है। अपनी स्वतंत्रता को न समझकर अलग-अलग धर्मों में फंसा रहता है।

मनीष कुमार यादव
सहायक श्रेणी-II (सामान्य)
मंडल कार्यालय, चेन्नई

छठ पूजा

उत्तर भारत में मनाये जाने वाले सबसे बड़े पर्वों में से एक है छठ पूजा और ये विशेष रूप से दो राज्यों में मनाया जाता है। अपनी जन्मभूमि से दूर रहने वाले लोग भी जहाँ कहीं रहते हैं वही पर इस त्यौहार को मनाते हैं, इसलिए आजकल, यह विदेशों में भी मनाते देखा जा रहा है। छठ पूजा के लिए बिहार सबसे मशहूर है।छठ पूजा उत्तर प्रदेश और बिहार के सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक माना जाता है जो भारत के उत्तर पूर्व भाग में स्थित है। यह कार्तिक माह के-6वें शुक्ल पक्ष में मनाया जाता है। यह एक शुभ अवसर है और हर वर्ष मनाया जाता है। इस पूजा में लोग 3 दिन का उपवास रखते हैं। यह पुरुष या महिला किसी के भी द्वारा किया जा सकता है। जो कोई अपनी इच्छा पूरी करना चाहते हैं वे छठ माता से प्रार्थना करते हैं। ऐसी मान्यता है कि छठ माता उस व्यक्ति की सभी मनोकामनाएं पूरी करती हैं जो इस व्रत को स्वीकार करते हैं। यह हिन्दू धर्म के पवित्र कार्तिक माह के 6वें दिन मनाया जाता है, इसलिए इसे छठ के रूप में जाना जाता है जिसका अर्थ है छह। एक मान्यता यह भी है कि भगवान सूर्य की एक बहन थी जिनका नाम छठ माता था, इसलिए लोग उनकी बहन को प्रभावित करने के लिए भगवान सूर्य से प्रार्थना करते हैं।अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए लोग इस व्रत को रखते हैं और

आजकल दुनिया भर में लोग इस त्योहार को मनाते देखे जा सकते हैं। इस विशेष अवसर के लिए लोगों की बहुत सारी मान्यताएं हैं और कई नियम तथा प्रतिबंध हैं जिनका इस व्रत को करते समय कड़ाई से पालन करना चाहिए। ये नियम बेहद ही कठिन होते हैं फिर भी लोग अपने चेहरे पर खुशी के साथ इसका पालन करते हैं। वे 3 दिन तक खाना नहीं खाते हैं, फिर भी उनके चेहरे पर मुस्कुराहट बनी रहती है। वास्तव में यह विश्वास का त्योहार है जो उन्हें कई दिनों तक उपवास रखने में मदद करता है। भारत में कई त्योहार मनाए जाते हैं और उनमें से प्रत्येक की एक अलग मान्यता होती है। इसी तरह, छठ पूजा भी उनमें से एक है। यह हर साल दिवाली के बाद 6वें दिन मनाई जाती है और हमें इस अवसर पर काफी खुशी महसूस होती है।एक राजा थे प्रियव्रत, जिनकी कोई संतान नहीं थी और किसी तरह एक बार एक बच्चा पैदा हुआ था, मगर दुर्भाग्यवश वह मृत पैदा हुआ था। परिणामस्वरूप, राजा ने बच्चे को अपनी गोद में लेकर श्मशान की तरफ चल पड़े, लेकिन उनमें इतना ज्यादा दुख था कि वो खुद भी उसी : प्रकट होती है और वह राजा से देवीक्षण खुद को मार देना चाहते थे। तभी अचानक एक देवकन्याषष्ठी की प्रार्थना करने के लिए कहती है क्योंकि वही उसकी मदद कर सकती है। वह देवसेना थी, देव की बेटी थी और वह स्वयं देवी षष्ठी थी। राजा ने देवसेना की बातों का पालन किया और आखिरकार, उनको एक बेटा हुआ और इस तरह, यह व्रत और पूजा करने के लिए प्रसिद्ध हो गया।एक और मान्यता है कि जब भगवान राम और देवी सीता 14 वर्ष के वनवास के बाद लौटे थे। उन्होंने भी यही पूजा की थी।यह एक पारंपरिक त्योहार है और इस अवसर पर विशेष रूप से पकाया जाने वाला पारंपरिक प्रसाद सबसे अच्छा लगता है। लोग खास्ता और ठेकुआ खाना बेहद ही पसंद करते हैं जो इस अवसर पर बनाये जाने वाले दो मुख्य प्रसाद हैं।यह एक बहुत बड़े त्योहार की तरह लगता है क्योंकि परिवार के सभी सदस्य इसे एक साथ मनाते हैं, वे तैयारियों में एकदूसरे की मदद करते हैं। इन तीन दिनों में सभी को साफ़ और - ड़े पहनने चाहिए और सबसे मुख्य बात यहशुद्ध कपहै कि पूजा समाप्त होने तक यानी तीन दिनों तक आप प्रसाद नहीं खा सकते।बहुत से लोग इस अवसर को मनाने के लिए किसी नदी, तालाब या झील के पास इकट्ठा होते हैं और सच कहूँ तो मुझे इसका हिस्सा बनना काफी ज्यादा पसंद है। वास्तव में यह एक अद्भुत अनुभव है और सबसे प्रतीक्षित त्योहारों में से एक है।

एस जे आदिया
सुपुत्र के.जूलियट
सहायक श्रेणी-I(तकनीकी)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

सूर्या एस
प्रबंधक (संचलन)
मंडल कार्यालय, कोषिक्कोड़

दोषी कौन?

"मीनू,मीनू.....",मीनू के माता-पिता उसे पूरे घर में ढूंढ रहे थे । तभी एक प्यारी और छोटी बच्ची अपनी सुंदर सफेद पोशाक में उसके कमरे से बाहर आई।

"तुम कहाँ थे, हम तुम्हें काफी देर से बुला रहे हैं", उसकी माँ ने कहा। लेकिन मीनू ने कोई जवाब नहीं दिया.

"उसे मत डांटो, आज मेरी सुंदर बेटी का जन्मदिन है", उसके पिता ने उसकी माँ से कहा।

"क्या वह राजकुमारी की तरह नहीं दिख रही है" उसके पिता ने आगे कहा।

मीनू ने कोई जवाब नहीं दिया| माता-पिता हैरान दिखे|

माँ मीनू के जन्म दिन का केक लाने के लिए रसोई में गई। "मीनू आओ हम केक काटें, नहीं तो तुम्हें स्कूल जाने में देर हो जायेगी।"मीनू हिली नहीं|

"मीनू, क्या तुम ठीक हो?" उसके पिता ने पूछा। "क्या तुमने श्रवणयंत्र नहीं पहना है? "उसने यह देखने के लिए उसके बालों में अपनी उंगलियाँ फिराईं कि उसने श्रवणयंत्र नहीं पहना है। वह उसके कमरे में गया और पाया कि उसके बिस्तर के नीचे श्रवणयंत्र छिपा हुआ था।

वह मीनू के पास गया और शांति से उसे वह पहनाया, लेकिन उसने उसे दूर धकेल दिया। माता-पिता दोनों सदमे में आ गए, लेकिन उसकी भावना को समझा। उन्होंने अनुरोध किया और उसे इसे पहनने के लिए मना लिया।

मीनू ने रोते हुए कहा, "यह मेरा जन्मदिन है और मैं सुंदर दिखना चाहती हूं। "उसकी माँ ने कहा, "मेरी बेटी हमेशा सुंदर दिखती है और कानों में इयरपीस के साथ एक गुड़िया की तरह दिखती है। "नहीं, हर कोई मेरा मजाक उड़ाता है। वे कहते हैं कि मैं मशीनों वाला एक रोबोट हूं। मैं हर किसी की तरह सामान्य रहना चाहती हूं" मीनू इस समय रो रही थी। "नहीं मेरे बच्चे, कृपया मत रोओ। यह तुम्हारा जन्मदिन है और कृपया मत रोओ। देखो हमारे पास तुम्हारा पसंदीदा केक है। "मीनू ने मेज पर अपना पसंदीदा यूनिकॉर्न चॉकलेट केक देखने के लिए अपना सिर घुमाया वह खुशी से बहुत रोमांचित हो गई और ऊपर-नीचे उछलने लगी।

उसने खुशी-खुशी केक काटा ।

जब मीनू स्कूल के लिए निकल रही थी तो उसकी माँ ने उसे चूमा।"शाम को हम आपकी पसंद की फिल्म देखने चलते हैं और आपका पसंदीदा होटल भी "उसके पिता ने जाते समय वादा किया।

मीनू अपने घर से कुछ ही मीटर की दूरी पर अपने स्कूल जा रही थी तो वह खुशी से झूम रही थी। जैसे ही वह स्कूल के पास पहुंची तो सहपाठियों को देखकर उसका दिल धड़कने लगा। वह अपने आपको रोक नहीं पाई और सड़क के पार भाग गई।

एक बाइक तेजी से आई। देखने वाले लोग चिल्ला रहे थे। मीनू की सफ़ेद पोशाक खून से भीग रही थी। हर जगह खून था. लोग एकत्र हो गए, लेकिन मीनू ने अपने हाथों में हियरिंग एड को मजबूती से पकड़ रखा था। पाया गया कि बाइक सवार ने ईयरफोन पहन रखा था, जिसके कारण वह लोगों की चेतावनी देने के लिए चिल्लाने की आवाज़ भी नहीं सुन सका।
किसे दोषी ठहराया जाए, वे जो सुनने में सक्षम हैं लेकिन बहरे हो गए हैं या वे जिन्हे भगवान ने ही बहरा बनाया है।

आरती
सहायक श्रेणी-III (राजभाषा)
मंडल कार्यालय ,बेंगलुरु

मायका

माँ की मौत के बाद जब तेरहवी भी निपट गई तब नम आँखों से चारु ने अपने भाई से विदा ली।

"सब काम निमट गये भैया माँ चली गई अब मैं चलती हूँ भैया !" आंसुओ के कारण उसके मुंह से केवल इतना निकला।" रुक चारु अभी एक काम तो बाकी रह गया ... ये ले माँ की अलमारी खोल और तुझे जो सामान चाहिए तू ले जा !" एक चाभी पकड़ाते हुए भैया बोले।" नही भाभी ये आपका हक है आप ही खोलिये !" चारु चाभी भाभी को पकड़ाते हुए बोली। भाभी ने भैया के स्वीकृति देने पर अलमारी खोली।

" देख ये माँ के कीमती गहने , कपड़े है तुझे जो ले जाना ले जा क्योकि माँ की चीजों पर बेटी का हक सबसे ज्यादा होता है !" भैया बोले।

"भैया पर मैने तो हमेशा यहां इन गहनो , कपड़ो से कीमती चीज देखी है मुझे तो वही चाहिए !" चारु बोली।

" चारु हमने माँ की अलमारी को हाथ तक नही लगाया जो है तेरे सामने है तू किस कीमती चीज की बात कर रही है !" भैया बोले।

" भैया इन गहने कपड़ो पर तो भाभी का हक है क्योकि उन्होंने माँ की सेवा बहू नही बेटी बनकर की है। मुझे तो वो कीमती सामान चाहिए जो हर बहन बेटी चाहती है !" चारु बोली।

" मैं समझ गई दीदी आपको किस चीज की चाह है । दीदी आप फ़िक्र मत कीजिये मांजी के बाद भी आपका ये मायका हमेशा सलामत रहेगा ! पर फिर भी मांजी की निशानी समझ कुछ तो ले लीजिये !" भाभी भरी आँखों से बोली तो चारु रोते हुए उनके गले लग गई।

" भाभी जब मेरा मायका सलामत है मेरे भाई भाभी के रूप मे फिर मुझे किसी निशानी की जरूरत नही फिर भी आप कहती है तो मैं ये

हँसते खेलते मेरे मायके की तस्वीर ले जाना चाहूंगी जो मुझे हमेशा एहसास कराएगा की मेरी माँ भले नही पर मायका है !

" चारु पूरे परिवार की तस्वीर उठाते हुए बोली और नम आँखों से विदा ली सबसे...

धारा-8 में नियम बनाने की शक्ति –

केन्द्रीय सरकार इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए नियम, शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, बना सकेगी ।

इस धारा के अधीन बनाया गया हर नियम, बनाए जाने के पश्चात् यथाशीघ्र, संसद के हर एक सदन के समक्ष, जब वह सत्र में हो, कुल तीस दिन की अवधि के लिए रखा जाएगा। वह अवधि एक सत्र में, अथवा दो या अधिक आनुक्रमिक सत्रों में पूरी हो सकेगी । यदि उस सत्र के या पूर्वोक्त आनुक्रममिक सत्रों के ठीक बाद के सत्र के अवसान के पूर्व दोनों सदन उस नियम में कोई परिवर्तन करने के लिए सहमत हो जाएं तो तत्पश्चात वह ऐसे परिवर्तित रुप में ही प्रभावी होगा । यदि उक्त अवसान के पूर्व दोनों सदन सहमत हो जाएं कि वह नियम नहीं बनाया जाना चाहिए तो तत्पश्चात यह निस्प्रभाव हो जाएगा । किन्तु नियम के ऐसे परिवर्तित या निस्प्रभाव होने से उसके अधीन पहले की गई किसी बात की विधिमान्यता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा ।

(राजभाषा में कार्य करना आसान है, शुरू तो कीजिए।)

कैलाश कुमार सिंह
स. श्रे- III (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरू

ऐश्वर्या लक्ष्मी
स.श्रे.III (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, पालक्काड़

एक कविता हर माँ के नाम

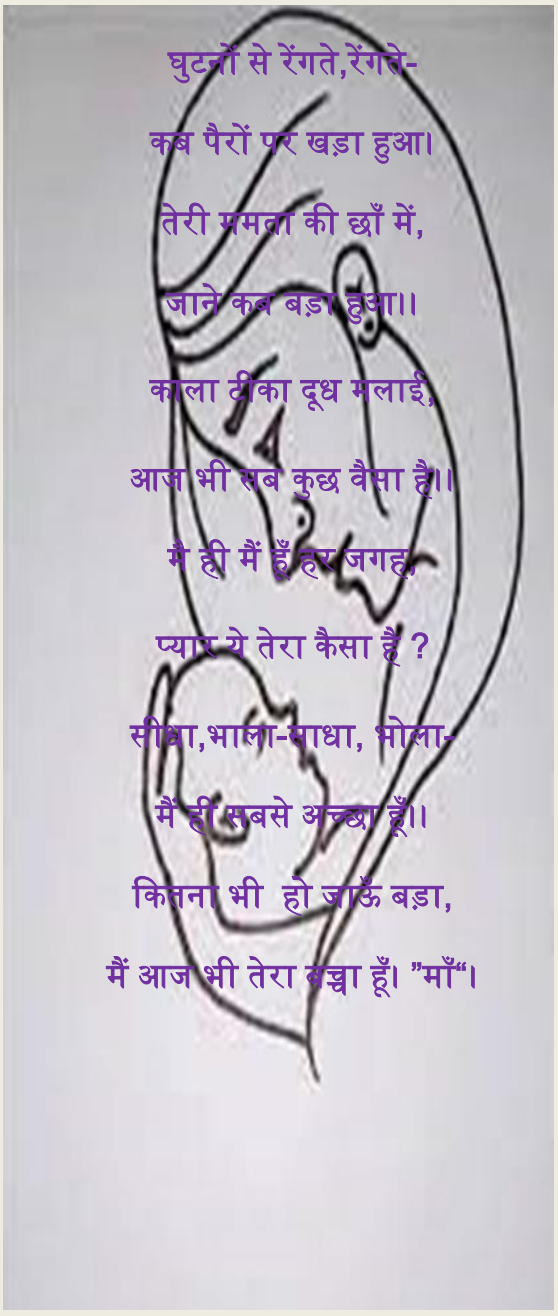

घुटनों से रेंगते,रेंगते-
कब पैरों पर खड़ा हुआ।
तेरी ममता की छाँ में,
जाने कब बड़ा हुआ।।
काला टीका दूध मलाई,
आज भी सब कुछ वैसा है।।
मै ही मैं हूँ हर जगह,
प्यार ये तेरा कैसा है ?
सीधा,भाला-साधा, भोला-
मै ही सबसे अच्छा हूँ।।
कितना भी हो जाऊँ बड़ा,
मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ। "माँ"।

आखिर हम ही क्यूँ है

बढ़ते थियेटर की अंधकार में
जब हम सीटी बजाकर
तालियाँ मार के मज़ा लेते हैं फिल्म की
आ जाते हैं काली शैतानी हाथ पिछले सीट से।
मिट जाते हैं फिल्म के सारे मज़े ।
केवल बाकी रह जाती है –
"खामोशी"
अरे "झाँसी की रानी" भी तो है भारतवासी
तो हम भी बने"झाँसी की रानी"
ऐसे "झाँसी की रानी" बनके
करते हम घूम तो,
हज़ारों आंखें हमारी पीछा करते हैं।
हजारों प्रश्न हमारी पीछे करते हैं ।
आखिर ऐसा क्यूँ है
आखिर हम ही क्यूँ हैं .....

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है- जस्टिस कृष्णास्वामी अय्यर

लोकेश कुमार शाह के आर
सहायक श्रेणी-। (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय,चेन्नई

राजभाषा अधिकारी कौन है

भारतीय संस्कृति विविधता से एकता के सूत्र में बांधनेवाला एक लोकतंत्र है। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का अपना रंग छाये रहता है। जिससे उसके जिंदगी में हर तरीके के रंगीन परिस्थितियों से गुजरता है। चाहे वह भाषा से हो या वेश-भूषा से। जो कुछ भी हो मगर उसके लिए वह एक माध्यम से है, उसे समाज को दिखाता और दर्शाता है कि हमारी संस्कृति रंगीन और दूसरों से अलग है।

भारतीय समाज एक ऐसी ही विविधता की रंगों से समाया हुआ है। जो कोई ने भी इसमें समाया वे उसमें लीन हो जाते हैं। भाषा को लेकर व्यक्ति दर व्यक्ति में अपनापन का महसूस खास होता है। किसी भी व्यक्ति द्वारा सम-भाषायी व्यक्ति को संपर्क में आने पर वह अपनी भाषा के प्रति ज्यादा उत्सुक और जिज्ञासा प्रकट करता है जिससे कि वह अपनापन महसूस करता है।

कार्यालयीन कामकाज में हिंदी को राजभाषा के रूप में राजभाषा अधिनियम एवं राजभाषा नियम के तहत प्रायोजित तो कर दिया है ? मगर उसका यथासंभव इस्तेमाल अभी भी कार्यालयों में शेष है। इसमें राजभाषा प्रभारियों की योगदान निरंतर राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता और उसे अधिक-से-अधिक इस्तेमाल कार्यालयीन कामकाज में कराने के लिए तत्पर रहते हैं।

राजभाषा प्रभारियों की यह जिम्मेदारी होना चाहिए कि वह व्यवहारिकता से कार्य करें न कि परंपरागत कार्यों से जुड़े रहे। उनकी यह परंपरागत कार्यों के प्रति झुकाव राजभाषा हिंदी के प्रोन्नयन में कोई खास असर लाने वाला नहीं है। दैनंदिन दिनचर्या के काफी तनावग्रस्त वातावरण में कार्य करने वाले कार्मिकों के बीच राजभाषा हिंदी में कार्य करना एक अत्यंत चुनौतिपूर्ण विषय है। फिर भी व्यक्तिगत इच्छा से एवं भाषा के प्रति अपने प्यार को जाहिर

राजभाषा प्रभारी यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह अन्य अनुभागों द्वारा अयोजित पखवाड़े/प्रतियोगिताएं आदि में सहभागिता किया है। चूँकि ऐसे कार्यक्रमों में भाग लेने से आपसी सामंजस्य बनता है। जिससे राजभाषा हिंदी में भी कार्य करना एवं कराना आसान हो जाता है।

निष्कर्षत: राजभाषा प्रभारी का कार्य न केवल खानापूर्ति का हो, जबकि प्रभारी इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि राजभाषा के विकास से स्वयं का भी विकास होगा। जब स्वयं का विकास होगा हमारे मध्य एक आदर्श राजभाषा प्रभारी का स्वरूप उबरकर आएगा। वह ही किसी भी कार्यालय में अपना योगदान ऐसा दे सकेगा जिसके द्वारा फल तो मीठा ही नहीं, उसे आगे ले जाकर कार्यालय को अपने गतिविधियों द्वारा उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन पर पुरस्कार भी हासिल कराने में कामयाब सिद्ध होगा।

प्रदीप कुमार निराला
स.श्रे.III(सामान्य)
मंडल कार्यालय, पालक्काड़

खाद्य सुरक्षा दिवस

7 जून 2019 को पहली बार "विश्व खाद्य दिवस" के रूप में मनाया गया । इसे लेकिन संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा दिसंबर 2018 में खाद्य और कृषि संगठन के सहयोग से 7 जून 2019 को "विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस" के रूप में अपनाया गया था

वैसे तो खाद्य सुरक्षा का मतलब होता है – सभी लोगों के लिए सदैव भोजन की उपलब्धता पहुँचे और उसे प्राप्त करने का सामर्थ्य रखने में सहयोग हो, वहीं खाद्य सुरक्षा हुआ है । जैसे सुरक्षित खाद्य मानकों को बनाए रखने के लिए जागरुक करना । खाद्य जनित बीमारियों के कारण होने वाली मौत को काम कारण डबल्यू एच ओ के अनुसार जीवन को स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने की दिशा में पर्याप्त मात्रा में सुरक्षित और पौष्टिक भोजन जरूरी है । लेकिन खाद्यान्नों की कीमतों में निरंतर वृद्धि हो रही है जिसके परिणाम स्वरूप भूखमरी की स्थिति पैदा हो रही है । अतः इस समस्या के समाधान के लिए खाद्यान्न सुरक्षा अत्यंत आवश्यक है ।

आर कलीमुथु वेंकटेश
सहायक श्रेणी.III(सामान्य)
मंडल कार्यालय, तूतीकोरिन

भारत में पर्यटन

प्रस्तावना : असल में जीवन का आनंद और मनोरंजन तो पर्यटन में ही है, यह ज्ञानवर्धन का अनोखा साधन है। आज जब दुनिया मेंट्रैफिक के ड्राइवर का बाहुल्य है और आवास की सुविधाएं हैं तो पर्यटन ने एक उद्योग का रूप ले लिया है। भारत के लिए यह विदेशी मुद्रा जमा करने का एक अच्छा स्रोत साबित हुआ है।

सम्भावनाएं : भारत में बहुत-से दर्शनीय स्थल हैं; जैसे- ताजमहल, लालकिला, फतेहपुर सीकरी, हवा महल आदि ऐतिहासिक इमारतें, काशी, मथुरा, उज्जैन और पुरी जैसे धार्मिक स्थान, गोवा का सुरम्य समुद्री तट,अजन्ता,ऐलोरा और खजुराहो की अनिवर्चनीय कलात्मकता आदि है। इन दर्शनीय स्थलों को देखने भारत से ही नहीं अपितु विदेशों से भी पर्यटक आते हैं। पर्यटक इन दर्शनीय स्थलों को

देखकर बहुत आनन्दित एवं रोमांचित हो उठते हैं। भारत की विशाल सांस्कृतिक धरोहर तथा प्रकृति की रंगीन छटा में पर्यटको को आकर्षित करने की अनन्त सम्भावनाएं हैं।

वर्तमान स्थिति : भारत में वर्तमान में पर्यटन विकास की स्थिति काफी खराब है। सरकार भी इस पर ध्यान नहीं देर ही है। पर्यटन की अपरिमित सम्भावनाओं के होते हुए भी इसके मामले में भारत विश्व के मानचित्र पर कहीं दिखाई नहीं पड़ता। आय के मापदण्ड के आधार पर भी हमारे पर्यटन उद्योग की स्थिति अत्यन्त निराशा जन कहै। अत: पर्यटन का अर्थ सिर्फ मनोरंजन मात्र ही नहीं है बल्कि यह एक मनुष्य के जीवन का सुखदायी पल होता है जहाँ वह मनोरंजन के साथ ऐतिहासिक और धार्मिक धरोहरों को देखता है और उसे जीवनभर के लिए उस पल को याद करता है।

सुबोध कुमार पोद्दार
सहायक श्रेणी – II (आगार)
मंडल कार्यालय, विशाखापत्तनम

विश्वास

"विश्वास" श्वाँस की तरह हर व्यक्ति के जीवन का आवश्यक और महत्वपूर्ण अंग है | बिना विश्वास किसी के जीवन की कल्पना नहीं कि जा सकती है, इसके बिना जीवन असंभव है |

माता-पिता, शिक्षक, धार्मिक पंडित, पुरोहितों, संत-फकीर, सरकार, वैध, डॉक्टर, वकील, नेताओं इन सभी के द्वारा विश्वास की बात की जाती है | किंतु अक्सर देखा गया है कि जिसने भी विश्वास की बात कही उसने खुद पर आश्रित करवाने की बात सोची | उसने अपने पर दुसरों को भरोसा करने को कहा, ऐसे लोग कम ही हुए जिसने खुद पर भरोसा करने को कहा |

आजकल के स्वार्थी लोग 'मुझ पर विश्वास करो' की बात कहकर आपका समर्थन, हाथ और साथ सभी माँग रहे होते है | इस तरह के व्यक्ति को आपकी कम व खुद के सम्मान की परवाह अधिक होती है |

एक खास बात यह भी है कि विश्वास मस्तिष्क की सोच का नाम नहीं है | विश्वास ह्रदय का भावनात्मक अवस्था है जिसे सोच-विचार कर अपनाया या छोड़ा नहीं जा सकता है |

विश्वास चाहे राई के दाने जितना भी हो किंतु एकमुश्त हो | अगर हमारा विश्वास अडिगमजबुत / हो तो पर्वत भी अपना रास्ता बदल देती है|

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता स्वयं सिध्द है- महावीर प्रसाद द्विवेदी

आकृति सक्सेना
स.श्रे.-III(सामान्य)
मंडल कार्यालय, रायचूर

भारतीय कृषि : समस्याएँ और समाधान

भारत की स्वतंत्रता के कई दशक बीत चुके हैं। 1947 से लेकर अब तक हमारा देश बहुत से कार्यो में सफलता प्राप्त कर चुका है जैसेकि – अंतरिक्ष कार्यक्रम, हमारी सेना विश्व की सबसे ताकतवर सेनाओं में से एक है और तो और हमारा देश विश्व की पाँचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। इन सब के अतिरिक्त एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ पर विकास की सीढ़ियाँ पहुँचने में ज़रा असमर्थ रही हैं और अगर पहुंची भी हैं तो संतोषजनक नहीं पायी गयी हैं।

भारत के किसान कृषि में निवेश करने तक के लिए पूंजी नहीं है। जितनी भी पूंजी उपलब्ध होती है वो

उसे कृषि में लगाते हैं पर पर्याप्त पूंजी न होने के कारण फसल की गुणवत्ता कमजोर होती दिखती है अतः अंत में वह खराब होने की कगार पर आ जाती है और किसान अपना मामूली खर्च एवं कर्ज़ चुकाने में समर्थ नहीं बचता है। इस उपलक्ष में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना और प्रधान मंत्री सम्मान निधि जैसी योजनाओ को लाया गया जो बहुत मददगार साबित हो रही हैं।

अन्य समस्याओं की बात की जाए तो सिंचाई भी एक एसी समस्या है जो देश में कई हिस्सों के किसानो को परेशान करती हैं। अधिकतम किसान गरीब हैं अतः उनके पास सिंचाई के लिए नयी तकनीकी सिंचाई टेक्नालजी एवं ट्यूबवेल्ल्स लगाने की लागत उपलब्ध नहीं है। अतः अधिकतर किसान साल के वर्षा पर ही निर्भर रहते हैं। और हमसब जानते ही हैं कि विश्व में बारिश की कितनी समस्या है। इसी के उपलक्ष्य में प्रधानमंत्री कुसुम योजना लायी गयी थी जो इस समस्या का निधन बन सकती थी पर इसके लाभ केवल कुछ गिने चुने किसान लाभार्थियों को ही पहुँच पाता है।

एक बड़ा कारण कृषि क्षेत्र में बदलाव न आने का यह भी हो सकता है की आजकल के किसानो को नयी कृषि तकनीकों एवं संसाधनो पर पर्याप्त जानकारी एवं ट्रेनिंग नहीं दी जाती है जिसकी वजह से किसान भाई इन तकनीकों का उपयोग नहीं कर पाते हैं। अतः सरकार ने इससे संबन्धित कई ट्रेनिंग केंद्र खोले हैं जो किसानो को इनसब से संबन्धित जानकारी दी जाती है। और तो और किसान अपना ऋण चुकाने के चक्कर में अपनी फसलों को एम.एस.पी से कम दामो में बेचकर नुकसान उठाते हैं। यह एक बहुत ही चिंताजनक बात है।

हिंदी हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक व्यवहार में आने वाली भाषा है- राहुल सांकृत्यायन

इन सब समस्याओं से निपटने के लिए सरकार 7 सूत्रीय रणनीति पर काम कर रही है-

1. प्रति बूंद अधिक फसल रणनीति
2. उच्च गुणवत्ता वाले बीजों का प्रयोग
3. कृषि उपज को नष्ट होने से बचाने के लिए गोदामो में एयर कोल्ड स्टोरेज में अधिक से अधिक निवेश करना।
4. खाद्य प्रसंस्करण के माध्यम से कृषि क्षेत्र में मूल्यवर्धन को बढ़ावा दिया जा रहा है।
5. राष्ट्रीय कृषि बाज़ार का निर्माण किया जा रहा है जिससे की किसानो को सही दाम मिल सके।
6. प्राकतिक आपदाओं के कारण जो फसल खराब हो जाती है उसके लिए सरकार ने फसल बीमा योजना पर ज़ोर दिया है।
7. विभिन्न योजनाओं के माध्यम से डेयरी, पशुपालन, मधुमक्खी पालन, पोल्ट्री, मत्स्य पालन इत्यादि कृषि सहायक क्षेत्रों के विकास पर बल दिया जा रहा है।

इन सब रणनीतियों पर अगर अच्छे से काम किया जाएगा तो संभवतः किसानो की स्थिति सुधर सकती है एवं कृषि क्षेत्र में अधिक से अधिक सुधार लाया जा सकता है।

धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले कागजात

1.सामान्य आदेश/General Orders
2.अधिसूचनाए/Notification
3.प्रेस-विज्ञाप्तियां/Press Communiques
4.संविदा/Contract
5.करार/Agreement
6.अनुज्ञप्ति/Licence
7.अनुज्ञा पत्र/Permit
8.निविदा प्रारूप/ Tender Forms
9.संकल्प/Resolution
10.नियम/Rule
11.सूचनाएं/Notices
12.प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन/Administrative or other reports
13. संसद में प्रस्तुत हेतु प्रशासनिक और अन्य रिपोर्ट/Administrative and other Rep to be Parliament
14.संसद में प्रस्तुति हेतु राजकीय कागजात/Official paper to be laid in Parliament

शालिनी राजू
प्रबंधक (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय,बेंगलुरु

मैं बैठी हूं.....

उलझनों और कश्मकश में

उम्मीद की ढाल लिए बैठी हूं,

ए जिंदगी तेरी हर चाल के लिए

मैं दो चाल लिए बैठी हूं।

लुफ़्त उठा रही हूं मैं भी आंख मिचोली का,

मिले कामयाबी, हौंसला कमाल का लिए बैठी हूं।

चल मान लिया, दो मेरे नहीं दिन चार-मुताबिक,

दिल में अपने ये सुनहले साल लिए बैठी हूं।

ये गहराइयां,ये लहरें, ये तूफ़ा, तुम्हें मुबारक....

मुझे क्या फ़िक्र, मैं कश्तियां और दोस्त बेमिसाल लिए बैठी हूं।

भानू प्रताप सिंह
सहायक श्रेणी-III (सामान्य)
मंडल कार्यालय, हुबली

"अन्त स्वर"

सुख पाने को कभी न जाना,
कदमों को तुम लेना मोड़।
समझ रहे हो जिनको अपना,
जायेंगे एक दिन तुमको छोड़।।
सूखे गुलाबों से खुशबू का
कण-कण जब उड़ जायेगा
ना चाहोगे लेकिन तुमकों
याद कोई तो आयेगा।।
बाँध न ले ऐसे बचना
जिनको तुम न पाओ तोड़
समझ.....।।
आधे अधरे से वो किससे,
आँखों में रह जायेंगे।
याद करोगे जब भी उनको,
आँसू बन बह जायोंगे।।
जिनको याद न जीने दे,
समझ.....।।
आडे तिरछे और धुँधले से
नाम लिखें जो किताबों में।
याद ही उनकी साथ रहेगी
छोड़ गये राहों में जिन पन्नों पर
नाम लिखा हो
उनको तुम देना मोड़।

गुड्डू कुमार राणा
सहायक श्रेणी-II (आगार)
मंडल कार्यालय,विशाखपत्तनम

सिरी बाला. ए
सहायक श्रेणी-III (लेखा)
मंडल कार्यालय, तारनाका

कदम उठा और चले चल तू..

कदम उठा और चले चल तू,
थक मत, हार मत, चलना ही नाम है जिंदगी का|

अपनी कुछ मंजिल बना और उसका पीछा कर,
तब जाके मायना स्पष्ट होगा तुम्हारी जिंदगी का|

यूँ तो कीड़े मकोड़े भी अपना जीवन काट लेते हैं,
सफ़र कैसा होगा ये तय कर तू अपनी जिंदगी का|
कुछ लोग सुबह अपनी नींद को नहीं हरा पाते,
सोचो, वो कैसे सामना करेंगे इस मुश्किलों भरी जिंदगी का|
लोगों को मैंने बहाने बनाते और अवसर को टालते देखा है,
ऐसे लोग दलीलें भी बड़े कमाल की देते हैं,
“मेरा तो बैक ग्राउंड ही मजबूत नहीं है, मेरी तो किस्मत ही खराब है”,
ऐसे लोग क्या ख़ाक सफल होंगे इम्तिहान में, जिंदगी का|
बदलाव संसार का नियम है, जानते तो सभी हैं,
सभी लोग इसे ख़ुशी-ख़ुशी अपनाते भी हैं,
जैसे बटन वाले मोबाइल को छोड़कर सभी ने स्मार्ट फ़ोन को अपनाया,
पर मुझे तो हंसी तब आती है जब लोग कहते हैं,
आज भी केवल नौकरी ही करेंगे आजीविका चलाने के लिये, जिंदगी का।

खुद से भी मिला कीजिए

न चादर बड़ी कीजिए,

न ख्वाहिशे दफन कीजिए,

चार दिन की जिंदगी है,

बस चैन से बसर कीजिए ....

न परेशान किसी को कीजिए,

न हैरान किसी को कीजिए,

कोई लाख गलत भी बोले,

बस मुस्कुरा कर छोड़ दीजिए ....

न रूठा किसी से कीजिए,

न झूठा वादा किसी से कीजिए ,

कुछ फुरसत के पल निकालिए,

कभी खुद से भी मिला कीजिए।

पंकज सिंह
सहायक श्रेणी-III (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, कडलूर

कार्यालय में भ्रष्टाचार

कार्यालय में कार्य न करना वर्तमान समाज 'स्मार्टवर्क' में गिना जाने लगा है। हम बड़े ही सहज भाव से इस घटना को स्वीकार कर लेते हैं। देखने में यह घटना जितनी साधारण दिखती है अगर आंतरिक मुद्दें पर जाएं तो समाज के लिए अत्यंत घातक है। भ्रष्टाचार का नाम सुनते ही हमारे दृष्टि में सफेदपोश नेता खड़े हो जाते हैं और हमारा ध्यान कार्यालय से कोशों दूर होता है अगर देखा जाएं तो भ्रष्टाचार सबसे ज्यादा कार्यालय में ही मौजूद है।

एक व्यक्ति अगर महीने का 60000 कमाता है तो हिसाबन वह दिन का 2000 और घण्टें का 250 रुपए का काम करता है। मान लिया जाए व्यक्ति प्रतिदिन 2 घण्टे काम बातें करने, चाय पीने या बाकी दूसरे कार्यों में नष्ट करता हो तो वह दिन का 500, महीने का 15000 और वर्ष का 1,80,000 रुपए का भ्रष्ट तरीके से कमा रहा है। कार्यालय का यह स्मार्टवर्क नजर में नहीं आता परन्तु वास्तव में यह सॉफ्टपॉयटन है। यह समाज का वह केंसर जिसका इलाज किसी के पास नहीं है। यह जहर समाज के प्रत्येक हिस्से में फैल गया है जो धीरे-धीरे देश के गर्व को नष्ट-भृष्ट करते जा रहा है और हम बस मूक-दर्शक बनें देख रहे हैं क्योंकि दूसरी ओर से देखा जाए तो हम भी इस समाज के हिस्से हैं जो सबसे स्वयं लाभ की चिंता करता है।

आज हम चाह कर भी कार्यालयी भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं हो सकते हैं क्योंकि राष्ट्र के विकास से पहले स्वयं के विकास के बारे में सोचते हैं और ऐसे विचार के साथ भ्रष्टाचार से मुक्त होना असंभव सा प्रतीत हो रहा है। इस केंसर से छुटाकार पाने के एक ही तरीका है प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्य को बस कार्य न समझ कर कर्तव्य समझ कर निभाएं, कर्मचारी को मिला काम उसको अपने कार्य की तरह लगे। अगर कार्यालय का हर व्यक्ति यह ठान ले कि उसको कार्य करने के लिए दिय गया काम बस काम नहीं कर्तव्य है वह अपने 8 घण्टे को ईमानदारी के साथ वहन करना शुरू कर दे तभी हम इस बीमारी से छुटकारा पा सकते हैं। यह काम कोई दूसरे के सहारे न छोड़ कर स्वयं करना होगा क्योंकि किसी महापुरुष ने कहा था –"सुधार की शुरुआत घर से होनी चाहिए"। देश का प्रत्येक

नागरिक अपना काम ईमानदारी से करें तो उससे एक कार्यालय, कार्यालय से समाज, समाज से राज्य और राज्य से एक देश भ्रष्ट होने से मुक्त हो जाएगा।

वर्तमान समय में कार्यालय का हालात बहुत गंभीर है। लोग कार्यालय में एक नए समूह का निर्माण कर लेते हैं और समूह-चर्चा में कार्य का समय बर्बाद कर देते हैं जो कार्यालय के हित के लिए बिल्कुल अच्छा नहीं है।

हम अपने अंदर यह कामचोरी का भाव रखते हुए यह सोचते हैं कि हम स्वयं काम का कम हिस्सा करके ही पूरी वेतन पूरा उठा ले। परन्तु हमारे इस आलस का परिणाम हमारे आने वाली पीढ़ी को भोगना पड़ेगा है इसके बारे में कोई नहीं सोचता। कर्मचारी एक छोटे से कार्य को करने में महीनों लगा देते हैं और इसको ही स्मार्ट वर्क कहते हैं। यह कार्य देखने में नगण्य है पर इसका परिणाम बहुत गहन है। अपने थोड़े से सुख के लिए कितनों के जीवन में दुःख की नदियां बहां देते हैं। इससे हमें बचना होगी, इस कामचोरी, आलस के जंग लगे जंजीरों को तोड़ आगे निकलना होगा, हमें एक बार फिर एक जूट हो कर इसका विरोध करना होगा।

संग्रहतः कार्यलय में भ्रष्टाचार समावेश इस तरह से हो गया है कि उनके ईंटों तक में से कालाबाजारी के पैसे की बदबू आती है। वर्तमान समाज में कार्यालय भ्रष्टाचार का कंद्र बिंदु बन गया है। कर्मचारी घुस लेकर इसका उत्थान तो कर ही रहे हैं साथ ही अपने स्मार्टवर्क के माध्यम से भी इसे आश्रय दे रहे हैं। आज मलूक दास के दोहे को कर्मचारी चरितार्थ करने में लगे है।

अजगर करत न चाकरी
पंछी करत ना काम।
दास मलूका कह गए
सबके दाता राम।

भारतवर्ष में सभी विधाएं सम्मिलित परिवार के समान पारस्परिक सदमभाव लेकर रहती आई है - रवीन्द्रनाथ टेगौर

अंशु प्रिया
पत्नी- श्री गुँजन कुमार
सहायक श्रेणी-II (डिपो)
मंडल कार्यालय, बेंगलुरु

गृह लक्ष्मी

बहू कहां मर गई?

अंदर से आवाज- जिंदा हूं माँ जी।

तो फिर मेरी चाय क्यूं अभी तक नहीं आई, कब से पूजा करके बैठी हूं

ला रही हूं माँ जी,

बहू चाय के साथ, भजिया भी ले आयी, सास ने कहा तेल का खिलाकर क्या मरोगी?

बहू ने कहा- ठीक हैं माँ जी ले जाती हूं।
सास ने कहा- रहने दे अब बना दिया हैं तो खा लेती हूं।
सास ने भजिया उठाई और कहा- कितनी गंदी भजिया बनाई हैं तुमने।
बहू- माँ जी मुझे कपड़े धोने हैं मैं जाती हूं।
बहू दरवाजे के पास छिपकर खड़ी हो गयी।
सास भजिया पर टूट पड़ी और पूरी भजिया खत्म कर दी।
बहू मुस्कुराई और काम पर लग गई।
दोपहर के खाने का वक्त हुआ। सास ने फिर आवाज लगाई- कुछ खाने को मिलेगा।
बहू ने आवाज नहीं दी।
सास फिर चिल्लाई- भूखे मारोगी क्या, बहू आयी सामने खिचड़ी रख दी।

सास गुस्से से- ये क्या है, मुझे इसे नहीं खाना इसे। ले जाओ।

बहू ने कहा- आपको डॉक्टर ने दिन में खिचड़ी खाने को कहा है, खाना तो पड़ेगा ही।

सास मुंह बनाते हुए, हाँ तू मेरी माँ बन जा, बहू फिर मुस्कुराई और चली गई।

आज इनके घर पूजा थी, बहू सुबह 4 बजे से उठ गयी। पहले स्नान किया, फिर फूल लाई। माला बनाई। रसोई साफ की। पकवान और भोज बनाया। सुबह के 10 बज गए।अब सास भी उठ चुकी थी। बहू अब पंडित जी के साथ भगवान के वस्त्र तैयार कर रही थी। आज ऑफिस की छुट्टी भी थी उनके पति भी घर पर थे।

पूजा शुरू हुई,

सास चिल्लाती बहू ये नहीं है, वो नही है। बहू दौड़ी-दौड़ी आती और सब करती। अब दोपहर के 03 बज गये थे, आरती की तैयारी चल रही थी, पंडित जी ने सबको आरती के लिए बुलाया और सबके हाथों में

थाली दी, जैसे ही बहू ने ली पकड़ी, थाली हाथों से गिर पड़ी। शायद भोज बनाते हुए बहू के हाथों मे तेल लगा था, जिसे वो पोंछना भूल गयी थी।

सारे लोग तरह-तरह की बातें करने लगे। कैसी बहू है, कुछ नहीं आता। एक काम भी ठीक से नहीं कर सकती। ना जाने कैसी बहू उठा लाए। एक आरती की थाली भी संभाल नहीं सकती उसके पति भी गुस्सा हो गए पर सास चुप रही। कुछ नहीं कहा। बस यही बोल के छोड़ दिया सीख रही है, सब सीख जाएगी धीरे-धीरे।अब सबको खाना परोसा जाने लगा, बहू दौड़-दौड़ के खाना देती, फिर पानी लाती। करीब 70- 80 लोग हो गये थे, इधर दो नौकर और बहू अकेली फिर भी वहाँ सारा काम, बहुत ही अच्छे तरीके से करती।अब उसकी सास और कुछ आस पड़ोस के लोग खाने पर बैठे, बहू ने खाना परोसना शुरू किया, सब को खाना दे दिया गया, जैसे ही पहला निवाला सास ने खाया- तुमने नमक ठीक नहीं डाला क्या। एक काम ठीक से नहीं करती। पता नहीं मेरे बाद कैसे ये घर संभालेगी। आस-पड़ोस वालों को तो जानते ही हो ना साहब। वो बस बहाना ढूंढते हैं नुक्स निकालने का। फिर वो सब शुरू हो गये, ऐसा खाना है, ऐसी बहू है, ये वो वगैरहा-वगैरहा। दिन का खाना हो चुका था, अब बहू बर्तन साफ करने नौकरों के साथ लग गई।

रात में जगराता का कार्यक्रम रखा गया था। बहू भी एक दो गीत गाने के लिए स्टेज पर चढ़ी।

सास जोर से चिल्लाई- मेरी नाक मत कटा देना, गाना नहीं आता तो मत गा, वापस आ जा।बहू मुस्कुराई और गाने लगी।सबने उसके गाने की तारीफ की, पर सास मुंह फूलाते हुए बोली, इससे अच्छा तो मैं गाती थी जवानी में, तुझे तो कुछ भी नहीं आता। बहू मुस्कुराई और चली गई।अब रात का खाना खिलाया जा रहा था। उसके पति के ऑफिस के दोस्त साइड में ही ड्रिंक करने लगे। उसका पति चिल्लाता थोड़ा बर्फ लाओ, तो सास चिल्लाती यहाँ दाल नहीं है, फिर चिल्लाता कोल्ड ड्रिंक नहीं है, पापड़ ले आओ।

इधर-उधर आखिरी में उसके पति की शराब गिर पड़ी उसके एक दोस्त पर और बोतल टूट गई।

पति गुस्से में दो झापड़ अपनी पत्नी को लगाते हुए कहता है- जाहिल कहीं की। देखकर नहीं कर सकती। तुझे इतना भी काम नहीं आता। सारे लोग देखने लगे। उसकी पत्नी रोते हुए कमरे की तरफ दौड़ी, फिर उसके दोस्तों ने कहा- क्या यार पूरा मूड खराब कर दिया, यहाँ नहीं बुलाया होता, हम कहीं और पार्टी कर लेते। कैसी अनपढ़-गंवार बीवी ला रखी है तूने। उसे तो मेहमानों की इज्जत और काम करना तक नहीं आता, तुमने तो हमारी बेईजती कर दी।

अब आस पड़ोस की औरतों को और बहाना मिल गया था। वो कहने लगीं, देखो क्या कर दिया तुम्हारी बहू ने। कोई काम कीं नही है। मैं तो कहती हूं अपने बेटे की दूसरी शादी करा दो, छुटकारा पाओ इस गंवार से।

सास उठी और अपने बेटे के पास जाकर उसे थप्पड़ मारा और कहा- अरे नालायक, तुमने मेरी बहू को मारा, तेरी हिम्मत कैसे हुई। तेरी टाँग तोड़ दूंगी, उसके बेटे के दोस्त कुछ कहने ही वाले थे कि उसकी माँ ने घूरते हुए- कहा चुप बिल्कुल चुप। यहाँ दारू पीने आये हो, जबकि पता है आज पूजा है और तुम्हें पार्टी करनी है, कैसे संस्कार दिये हैं तुम्हारे, माता-पिता ने।और किसने मेरी बहू को जाहिल बोला, जरा इधर आओ। चप्पल से मारूंगी अगर मेरी बहू को किसी ने शब्द भी कहा तो। अरे पापी, तूने उस लड़की को बस इसलिए मारा कि तेरी शराब टूट गयी, पापी वो बच्ची सुबह चार बजे से उठी है। घर का सारा काम कर रही है। ना सुबह से नाश्ता किया ना दिन का खाना खाया। फिर भी हंसते हुए सबकी बातें सुनते हुए, ताने सुनते हुए घर के काम में लगी रही। तेरे यार दोस्तो को वो अच्छी नहीं लगी। जूते से मारूंगी तेरे दोस्तों को जो कभी उन्होंने ऐसा कहा।

उसके यार दोस्त चुपके से खिसक लिए।

अब सास, बहू के कमरे मे गयी, और बहू का हाथ पकड़कर बाहर लाई। सबके सामने कहने लगी, किसने कहा था अपनी बहू को घर से निकाल के दूसरी बहू ले आना। जरा सामने आओ। कोई सामने नहीं आया। फिर सास ने कहा, तुम जानते भी क्या हो इस लड़की के बारें में। **ये मेरी "माँ" भी है, बेटी भी। माँ इसलिए मुझे गलत काम करने पर डाँटती हैं और बेटी इसलिए, कभी-कभी मेरी दिल की भावनाएं समझ जाती हैं। मेरी दिन-रात सेवा करती है। मेरे हजार ताने सुनती है पर एक शब्द भी गलत नहीं कहती। ना सामने ना पीठ पीछे**, और तुम कहते हो, दूसरी बहू ले आऊं। याद है ना छुटकी की दादी,अपनी बहू की करतूत, सास ने गुस्से से पड़ोस की महिला को कहा, अभी पिछले हफ्ते ही तुम्हें मियां-बीवी भूखे छोड़ घूमने चले गये थे। मेरी इसी बहू ने 7 दिनों तक तुम्हारे घर पर खाना-पानी यहाँ तक कि तुम्हारे पैर दबाने जाती थी और तुम इसे जाहिल बोलती हो। जाहिल तो तुम सब हो जो कोयले और हीरे में फर्क नही जानते। अगर आइंदा मेरी बहू के बारे में किसी ने एक लफ्ज भी बोला तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा क्यूंकि ये मेरी बहू नहीं, मेरी बेटी है।बहू सिसकियाँ लेते हुये फिर कमरें में चली गई। सास ने एक प्लेट उठायी और भोजन परोसा और बहू के कमरे में खुद ले गयी, सास को भोजन लाते देखा तो बहू ने कहा- अरे माँ जी आप क्या कर रही हों, मैं खुद ले लेती। सास ने प्यार से ताना मारते हुये कहा, डर मत इसमें जहर नही हैं, मार नहीं डालूंगी तुझे। तुझे नई सास चाहिए होगी, पर मुझे अभी भी तू ही मेरे घर की बहू चाहिए बहू ने अपनी सास को रोते हुए गले से लगा लिया। सास भी रो दी पहली बार और कहा- चल खाना खा ले। फिर उसके आंसू पोंछते हुए
बोली..... **अरे तु मेरी बहु नहीं मेरी बेटी है।**

अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का अधिकतम भाग पहल से ही जानता समझता है- महात्मा गाँधी

गुड्डी साव
स.श्रे-III (रा.भा)
मंडल कार्यालय,कोषिक्कोड

यादें

यादों से भी बढ़कर कुछ होता है क्या ??
मैं कहूंगी होता है,
यादों की पहले की खूबसूरत यादें,
जब हमें लगता है अच्छा होता ऐसा नहीं होता तो,
जो हो रहा है उसके पहले का क्षण
और जो बाद के क्षण होते है,
वे पहले खूबसूरत भले ही लगे हों,
पर वे ही से एहसास दिलाते हैं
कि कितने खूबसूरत थे
वे क्षण जब ये यादें नहीं थी।
क्षणों में गुजारे हुए क्षण खूबसूरत होते हैं
पर पूरे जीवन के लिए वही क्षण खामोश क्यों हो जाते हैं??
आज भी वही क्षण है क्यों खामोश पर ,?
कल तक जिसमें शोर था आज शून्य क्यों??

सुकिर्ति कुमारी
सहायक श्रेणी.III(रा.भा)
मंडल कार्यालय, कोयम्बत्तूर

नौकरी

ऐ नौकरी तू कितनी हसीन है,
महबूब है तू या कोई ख्वाब है,
होठों की प्यास तू या जीवन की आश है,
ऐ नौकरी तू बहुत खास है।
तेरा होना परिहास है,
तेरा न होना उपहास है,
तेरे संग चलता सम्मान है,
ऐ नौकरी तू बहुत खास है।
तू किसी शायर की गज़ल है,
तू किसी श्रमवान का फल है,
त्यौहारों का हलचल है,
ऐ नौकरी तू बहुत खास है।
कलयुग का तप है तू,
पूजा अराधना इबादत है तू,
सच कहूँ तो सबकी चाहत है तू,
ऐ नौकरी बहुत खास है तू ।
जीने की आश है तू,
हृदय की प्यास है तू,
ईश्वर में होता विश्वास है तू,
ऐ नौकरी इतनी खास है तू।

हिन्दी उन सभी से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है- मैथलीशरण गुप्त

राज किशोर पंडित
स.श्रे.-।।। (रा.भा)
मंडल कार्यालय कोच्ची

हिन्दी की पहचान

हिन्द के गर्भ से जन्म लेकर भी
हिन्दी ही आज अपना अस्तित्व खोज रही है।
लोग कहते हैं हिंदी में क्या है?
अरे ओ मेरे भारतवासी,!
पलट पन्ने इतिहास का
क्या भूल गया,पुकार के हिंदी सारे वो ,
जिससे एकजुट कर दिया सारे राष्ट्र को
अंग्रेजों के खिलाफ।
अंग्रेजों के तोपों के सामने ,
हिन्दी ही मुक्तजनों के कलम की धार बनी।
जोड़ लिया देशवासियों को अपने,
हिन्दी ने लोगों के कलम की धार बनकर।
तुम समझोगे भी कैसे?
अंग्रेजी चमक और दमक
तुझ पर से अभी गयी नहीं।
हिन्दी में ही वो शक्ति है जो,
हर भाषा को जोड़ कर रखती है।
चाहे धर्म की आंधी बहे या
जाति का भेद।
हिन्दी में वो शक्ति है जो
सबको जोड़ कर रखती है।
आओ हम सब मिलकर हाथ मिलाए,
हिन्दी भाषा को पहचान दिलाए।

मनोज कुमार साव
स.श्रे.-। (राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरु

तपा हुआ कलाकार

थपेडे खातेखाते वह कलाकार बना-,
बनकर सामने आया ।
जुते को छोडकर सर से पैर तक सीधा सीधा
हफ्ते में बस दो बार ही अपनी कला दिखाता ।
कुछ दर्शकों को उसकी कला पसंद है,
वह नहीं ।
कुछ को न उसकी कला पसंद है,
और न वह ही ।
दूसरे को देख रोता है मेरा हृदय,
क्योंकि मैं यह समझता हूं
कि वे यह अभी तक नहीं समझते-
कौन हीरा, कौन कोयला
मेरे दुःखी होने से क्या होगा
मै तो बस इतना जानता हूं--
जैसा वह आदमी है
ठीक वैसी ही अद्वितिय उसकी कला ।
समय भागा जा रहा है
और वह थपेडे खाये चला जा रहा है--
कुछ दर्शकों से, अन्य कलाकारों से,
खैर, इससे उसे फर्क नहीं पड़ता
क्योंकि मैं भी यह समझता हूं
शायद आप भी -
सोना जितना तपता है,
उतना निखरता चमकता है ।

गुँजन कुमार
सहायक श्रेणी-II (डिपो)
मंडल कार्यालय, बेंगलुरु

उपभोगवाद की हकीकत दर्शाती पोस्ट

सर में भयंकर दर्द था सो अपने परिचित केमिस्ट की दुकान से सर दर्द की गोली लेने रुका। दुकान पर नौकर था, उसने मुझे गोली का पत्ता दिया तो उससे मैंने पूछा गोयल साहब कहाँ गए हैं, तो उसने कहा साहब के सर में दर्द था सो सामने वाली दुकान में कॉफी पीने गये हैं अभी आते होंगे! मैं अपने हाथ मे लिए उस दवाई के पत्ते को देख रहा था ?

माँ का ब्लड प्रेशर और शुगर बढ़ा हुआ था, सो सवेरे सवेरे उन्हें लेकर उनके पुराने डॉक्टर के पास गया, क्लिनिक से बाहर उनके गार्डन का नज़ारा दिख रहा था जहां डॉक्टर साहब योग और व्यायाम कर रहे थे मुझे करीब 45 मिनिट इंतज़ार करना पड़ा।

कुछ देर में डॉक्टर साहब अपना नींबू पानी लेकर क्लिनिक आये और माँ का चेकअप करने लगे। उन्होंने मम्मी से कहा आपकी दवाइयां बढ़ानी पड़ेंगी और एक पर्चे पर करीब 5 या 6 दवाइयों के नाम लिखे। उन्होंने माँ को दवाइयां रेगुलर रूप से खाने की हिदायत दी। बाद में मैंने उत्सुकता वश उनसे पूछा कि क्या आप बहुत समय से योग कर रहे हैं तो उन्होंने कहा कि पिछले 15 साल से वो योग कर रहे हैं और ब्लड प्रेशर व अन्य बहुत सी बीमारियों से बचे हुए हैं! मैं अपने हाथ मे लिए हुए माँ के उस पर्चे को देख रहा था जिसमे उन्होंने BP और शुगर कम करने की कई दवाइयां लिख रखी थी?

अपनी बीवी के साथ एक ब्यूटी पार्लर गया। मेरी बीवी को हेयर ट्रीटमेंट कराना था क्योंकि उनके बाल काफी खराब हो रहे थे। रिसेप्शन में बैठी लड़की ने उन्हें कई पैकेज बताये और उनके फायदे भी। पैकेज 1200 से लेकर 3000 तक थे कुछ डिस्काउंट के बाद मेरी बीवी को उन्होंने 3000 रु वाला पैकेज 2400रु में कर दिया। हेयर ट्रीटमेंट के समय उनका ट्रीटमेंट करने वाली लड़की के बालों से अजीब सी खुशबू आ रही थी मैंने उससे पूछा कि आपने क्या लगा रखा है कुछ अजीब सी खुशबू आ रही है, तो उसने कहा उसने तेल में मेथी और कपूर मिला कर लगा रखा है इससे बाल सॉफ्ट हो जाते हैं और जल्दी बढ़ते हैं। मैं अपनी बीवी की शक्ल देख रहा था जो 2400 रु में अपने बाल अच्छे कराने आई थी।

मेरी रईस कज़िन जिनका बड़ा डेयरी फार्म है उनके फार्म पर गया। फार्म में करीब 100 विदेशी गाय थी जिनका दूध मशीनों द्वारा निकाल कर प्रोसेस किया जा रहा था। एक अलग हिस्से में 2 देसी गाय हरा चारा खा रही थी। पूछने पर बताया उनके घर उन गायों का दूध नही आता जिनका दूध उनके डेयरी फार्म से सप्लाई होता है, बल्कि परिवार के इस्तेमाल के लिए इन 2 देसी गायों का दूध, दही व घी इस्लेमाल होता है। मै उन लोगों के बारे में सोच रहा था जो ब्रांडेड दूध को बेस्ट मानकर खरीदते हैं।

एक प्रसिद्ध रेस्टुरेंट जो कि अपनी विशिष्ट थाली और शुद्ध खाने के लिए प्रसिद्ध है हम खाना खाने गये। निकलते वक्त वहां के मैनेजर ने बडी विनम्रता से पूछा सर खाना कैसा लगा, हम बिल्कुल शुद्ध घी तेल और मसाले यूज़ करते हैं, हम कोशिश करते हैं बिल्कुल घर जैसा खाना लगे। मैंने खाने की तारीफ़ की तो उन्होंने मुझे अपना विजिटिंग कार्ड मुझे देने के लिए अपने केबिन में विजिटिंग कार्ड लेने गये। काउंटर पर एक 3 डब्बों का स्टील का टिफिन रखा था। एक वेटर ने दूसरे से कहा **"सुनील सर का खाना अंदर केबिन में रख दे, बाद में खाएंगे"**। मैंने वेटर से पूछा क्या सुनील जी यहां नही खाते तो उसने जवाब दिया **"सुनील सर कभी बाहर नही खाते, हमेशा घर से आया हुआ खाना ही खाते हैं"**।

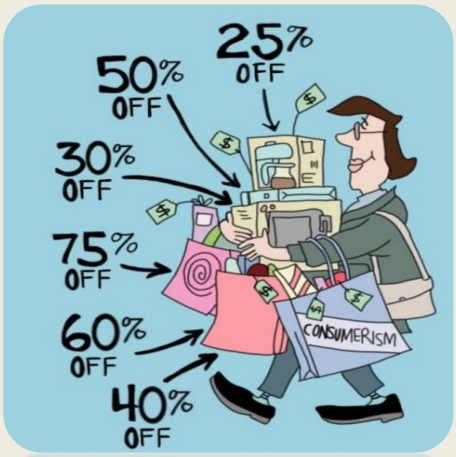

मैं अपने हाथ मे 1670 रु के बिल को देख रहा था। ये कुछ वाक्य हैं जिनसे मुझे समझ आया कि हम जिसे सही जीवन शैली समझते हैं वो हमें भ्रमित करने का जरिया मात्र है। हम कंपनियों के एटीएम मात्र हैं जिसमें से कुशल मार्केटिंग वाले लोग मोटा पैसा निकाल लेते हैं। अक्सर जिन चीजों को हमे बेचा जाता है, उन्हें बेचने वाले खुद इस्तेमाल नहीं करते।

प्रियांगी
सुपुत्री श्री गुँजन कुमार
स.श्रे.- II (डिपो)
मंडल कार्यालय, बेंगलुरु

नवीन कुमार चौबे
सहायक श्रेणी-II (सामान्य)
मंडल कार्यालय,कडलूर

भारत की विदेश नीति

भारत की विदेश नीति का मुख्य और पहला व सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य किसी भी अन्य देश की तरह अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना है। **"राष्ट्रीय हितों"** का दायरा काफी व्यापक होता है। हमारे मामले में इसमें उदाहरण के लिए शामिल है: क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए सीमाओं को सुरक्षित करना, सीमा पार आतंकवाद का बुनियादी ढांचे का निर्माण, गैर-भेदभावपूर्ण वैश्विक व्यापार प्रणाली, पर्यावरण सुरक्षा के लिए समान वैश्विक जिम्मेदारी, समकालिन वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करने के लिए वैश्विक शासन के संस्थानों में सुधार, निरस्त्रीकरण, क्षेत्रीय स्थिरता, अंतर्राष्ट्रीय शांति आदि। अपने विकास पथ को बनाए रखने के लिए भारत को पर्याप्त बाहरी इनपुट की आवश्यकता है। सफल होने के लिए हमारे संचालित कार्यक्रमों जैसे मेक इन इंडिया, स्किल्स इंडिया, स्मार्टसिटीज, अवसंरचना विकास डिजिटल इंडिया, स्वच्छ भारत आदि को विदेशी भागीदारी, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, वित्तीय सहायता और प्रोद्योगिकी के हस्तांतरण की आवश्यकता है और भारत धीरे-धीरे अब वैश्विक स्तर पर अपने सांस्कृतिक विचार के साथ प्रवेश कर रहा है। भारत अपने विश्व गुरु बनने के स्वप्न की ओर धीरे-धीरे अग्रसर हो रहा है। जहाँ कोरोना जैसे वैश्विक आपदा से खुद को उबार कर विश्व में विकासशील होने का दावा कर रहा है तो वही जी-20 सम्मेलन भारतीय संस्कृति से विश्व को रूबरू कराने का प्रयास भी कर रहा है। जी-20 सम्मेलन के शेरपा अमिताभ कांत के शब्दों में – **"भारत ने एक विश्व की बात अपनी सांस्कृतिक सोच के तर्ज पर रखी है जिसे हम इन्ही भावनाओं के अनुरुप ही भारत ने अपनी अध्यक्षता की थीम 'वासुधैव कुटुंबकम्' रखी है।"** इसका संपूर्ण विश्व के एक परिवार मानने से है। जी-20 के लोगो में भारत के राष्ट्रीय पुष्प कमल को स्थान दी गई है जो कठिनाई में वृद्धि और लचीलापन का प्रतीक है। लोगो में

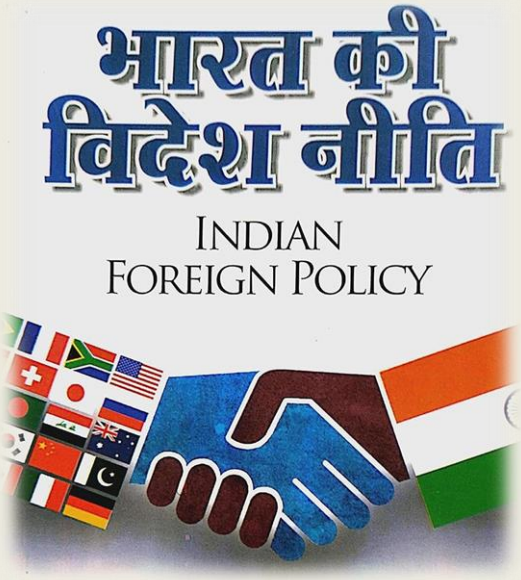

ग्लोब पृथ्वी का प्रतीक है जो भारत के पृथ्वी – हितैषी दृष्टिकोण का द्योतक है। लोगो और थीम मिलकर जी-20 में भारत के नेतृत्व के मर्म को प्रदर्शित करते हैं कि वह निर्विवाद रूप से एकजुट करने वाला शांतिदूत है।

भारत की सैन्य शक्ति भी केवल ऐसे शांति-रक्षा सैन्य अभियानों में योगदान देता है जो संयुक्त राष्ट्र शांति सेना का हिस्सा है। भारत ने लगभग 1,95,000 सैनिकों का योगदान दिया है, जो किसी भी देश की तुलना में सबसे बड़ी संख्या है। 49 से अधिक मिशनों में भाग लिया है और 168 भारतीयों की शांति सैनिकों ने संयुक्त मिशनों में सेवा करते हुए सर्वोच्य बलिदान दिया है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र मिशनों के लिए प्रख्यात सैन्य कमांडरों को भी प्रदान किया है और यह प्रयास जारी है।

पिछले पाँच वर्षों में देश के शीर्ष नेतृत्व ने दुनिया के लगभग सभी देशों को समय क्षेत्रों में कटौती की इस व्यापक कूटनीतिक विकास ने 'वसुधैवकुटम्बकम्' अर्थात् 'विश्व एक परिवार है' की भावना में, बड़े और छोटे देशों के साथ संबंध बनाने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया है।

निष्कर्षतः रूप से कह सकते हैं कि भारत आक्रमकता पर रचनात्मक जुड़ाव की नीति की वकालत करता है। भारत की विश्व शांति रूपी चादर आज धीरे-धीरे पूरे संसार को ढकने की प्रक्रिया में है और यही कारण है कि विश्व भारत की मध्यस्थता को स्वीकारने के लिए सहर्ष बाध्य है। भारत यही से विश्व गुरु का ढ़ाचा दुनिया के लिए बनकर तैयार होगा, जिसमें विभाजन नहीं बल्कि एकरूपता होगी।

नियम-12, अनुपालन का उत्तरदायित्व

केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह--

यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है;और

इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे ।

एम.बी.के. सुमन
मंडल प्रबंधक
मंडल कार्यालय, कोयंबत्तूर

खुद को एकांत पाता हूँ

गीत !धारा में बह जाते हैं
समाज की नैतिकता से
धराशायी हो जब
थक जाता हूँ खुद से ही
लड़ते भिड़ते
तब एकांत खोजता हूँ!
जहां सिर्फ़ मैं रहूँ
और मेरे गीत!
गीत जो गूंजते हैं
अंत सकी गहराइयों में
अनसुने रह जाने की कस कसे कण भर टूटते जाते हैं।
फिसलते जाते हैं,
पथरीली राहों से होते हुए
पहुँचते हैं वहाँ
जहाँ कोई नहीं
सिर्फ़ मैं हूँ!
और एक धारा बहती है।
पत्थरों से टकराती
पानी की धार,
मेरे मन के साँकलों को
झकझोरती है।
शाम की निस्तब्ध सभा में
लौटते पंछियों का शोर
मन के कोलाहल में
गुँथ जाता है।
लोहे के पुल से गुज़रते
गाड़ियों की आवाज में
साँसों की आवाज़
दब सी जाती है।
नचाहते हुए भी
बेचैन हो उठता हूँ
नज़रें जड़ हो जाती हैं।
पहाड़ की चोटियों से
फिसलते कुहासों के बीच
एक चेहरा उभरता है
बिजली की कौंध सी
दो आँखें चमकती हैं
कोई हाथ मेरी ओर बढ़ता है
और धीरे-धीरे
गीत !धारा में बह जाते हैं।

आनन्द वि
सहायक श्रेणी- III (लेखा)
मंडल कार्यालय, तूतीकोरिन

मैं हूँ

मैं भटका हूँ
मैं हारा हूँ
मैं थका हूँ
मैं किस्मतों का मारा हूँ
पर अपनी माँ का लाडला हूँ
पिता का प्यारा हूँ
दोस्तों का सहारा हूँ
मैं मैं हूँ।

अश्वती डी.डी
सहायक श्रेणी-।।। (राजभाषा)
मंडल कार्यालय,अल्लपी

सफलता की तलाश

रोशनी बहुत ही सफल औरत है। 26 साल की उम्र में ही वह एक उच्च सरकारी पद पर काम करती है।साथ ही अपना घर भी बसाती है। उसका अपना घर है, नौकरी है, इज्जत है, सब कुछ है क्या यह सब काफी नहीं है एक सफल औरत के लिए? रोशनी की माँ - बाप ने उसे पाल- पोस करबड़ा किया, रोशनी की इस सफलता में सबसे अधिक खुशी उसकी माँ -बाप को ही है। रोशनी की ससुरालवाले भी उसे इज्जत देते हैं। समाज कहती है किरोशनी से सीखो उसकी तरह बनो देखो कितनी सफल है वह।

रोशनी की मुलाकात एक छोटी सी बच्ची से होती है जो उसकी ऑफिस के आस- पास भटकती हुई उसे नजर आती है। वह उसको पास बुलाती है लेकिन बच्ची भाग जाती है। अगले ही दिन वह फिर से नजर आती है, रोशनी फिर उसे बुलाने कि कोशिश करती है, तुरन्त पीछे से किसी की आवाज आई वह किसी सी से बात नहीं करती बहुत अंतर्मुखी है। रोशनी नींद से उठती है।

वह अपनी ऑफिस की सबसे उच्च पदाधिकारी है। वह ऑफिस के सभी कामों में भी सबसे तेज है। इससे बढ़ कर उसे करना भी क्या है? जिंदगी में उसे हासिल ही क्या करना है।सक्सेसफुल एंपलॉयर, सक्सेसफुल वाइफ, सक्सेसफुल माँ, सक्सेसफुल बेटी..... जिंदगी में सब कुछ हासिल कर लिया।

रोशनी फिर एक दिन उस बच्ची से मिलती है। इस बार उसने दृढ़ निश्चय कर रखा था कि वह बच्ची से बात करके ही रहेगी। उसने उसे घेर लिया अब बच निकलने का कोई रास्ता नहीं बचा। पूछा तुम्हारा नाम क्या है ? तुम्हारा कोई दोस्त नहीं है? जो तुम अकेले यहाँ- वहाँ भटक रही हो? बच्ची ने कुछ देर जवाब नहीं दिया फिर कुछ देर बाद नजरे मिलाते हुए जवाब दिया। मुन्नी....! बस इतना बोलकर वह फिर चुप हो गई रोशनी ने उससे फिर से सवाल किया। तुम्हें खेलना पसंद नहीं? जो इधर-उधर भटक रही हो। बच्चों को इस उम्र में खेलना चाहिए। इस बार मुन्नी ने बिना कुछ सोचे समझे तुरंत जवाब दिया मुझे खेलना नहीं आता, मैं हर बार हार जाती हूँ इसलिए मेरे साथ कोई खेलना पसंद नहीं करता। खेलना नहीं आता !!! बच्ची से इस प्रकार का जवाब सुनकर रोशनी सोच में पड़ गई। उस अवसर का प्रयोग करते हुए बच्ची फिर निकल गई।

किसी की पुकार सुनी रोशनी मैडम !!! ..... रोशनी मैडम !!! रोशनी को ऑफिस का काम याद आया, फिर वह ऑफिस के कामों में व्यस्त रह गई। कुछ महीने बीत गई। ऑफिस के कामों से व्यस्त रहकर भी रोशनी की मन में बच्ची की बात बार-बार गूँज रही थी। लेकिन बच्ची की बात को वह समझ नहीं पाई। जिंदगी में इतना सक्सेसफुल व्यक्ति अनसक्सेसफुल की बात को कैसे समझ पाती।

रोशनी एक दिन ऑफिस के काम से थक कर कुछ देर आराम करने के लिए पास वाले पार्क जाती है। वह हल्की नींद में होती है उसे वह बच्ची वहाँ मिलती है।रोशनी उसके पास जाती है इस बार वह न भागी। उसे उसने अपने गोद में बिठा लिया। वास्तव में गोद में नहीं उर में बिठाया। उससे पूछती है मैं तुम्हारे साथ खेलूँ ? बच्ची बोली दूसरे बच्चे बोलते हैं मुझे खेलने नहीं आता। रोशनी उसे मनाते हुए बोली चलो कोशिश करके देखते हैं, कोशिश क रोगी तभी तो सीखोगी ना..... इतना कहकर रोशनी स्टोन-पेपर-सिसर जैसे छोटे-मोटे खेल बच्ची के साथ खेलने लगती है। वह बच्ची के साथ इस प्रकार गुल मिल जाती है मानो वह भी बच्चे बन गई। बच्ची सच में अच्छा नहीं खेल रही थी। फिर भी रोशनी ने उसे जिताया ताकि उसका आत्मविश्वास बड़े। एक ही खेल दस-दस बार खेलने से बच्ची की सच में जीत होती है आखिर बच्ची की आत्मविश्वास बढ़ ही जाती है। कुछ ही पल में रोशनी देखती है अब वह दूसरे बच्चों के साथ भी खेल कर जीत रही है। रोशनी दूर से तालियाँ बजाती है, मन ही मन सोचती है कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जिनको प्रत्येक ध्यान की जरूरत होती है जिससे वह आसमान छू जाते हैं।

रोशनी नींद से उठती है..... इस सच को स्वीकार करते हुए कि इंसान से जो काम एक बार में नहीं होती वह निरंतर अभ्यास से हो जाती है। किसी से एक बार में हो जाती है तो किसी से 10 बार में या किसी से 100 बार में लेकिन कभी ऐसा नहीं होता कि कभी ना हो पाए। वह नई जिंदगी की हवा के तलाश में है.... जिंदगी में सफलता की आजादी पाने।

हिन्दी की प्रगति से देश की सभी भाषाओं की प्रगति होगी - डॉ ज़ाकिर हुसैन

शे.मिन्हाज नूरिया
सहायक –II (तकनीकी)
मंडल कार्यालय, चेन्नई

प्रकृति संरक्षण

प्रस्तावना : प्रकृति ने हमें कई उपहार जैसे हवा, पानी, भूमि, धूप, खनिज, पौधों और जानवर दिए है। प्रकृति के ये सभी तो हफ़े हमारे ग्रह को रहने लायक जगह बनाते हैं। इनमें से किसी के भी बिना पृथ्वी पर मनुष्य के जीवन का अस्तित्व संभव नहीं होगा। जबकि ये प्राकृतिक संसाधन पृथ्वी पर प्रचुरता में मौजूद हैं, दुर्भाग्य से मानव आबादी में वृद्धि के कारण सदियों से इनमें से अधिकांश की आवश्यकता बढ़ गई है।

इनमें से कई प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग अधिक गति से किया जा रहा है जबकि उनका उत्पादन क्षमता कम है। इस प्रकार प्रकृति के संरक्षण तथा प्रकृति द्वारा उपलब्ध कराये प्राकृतिक संसाधनों को बचाने की आवश्यकता है। यहां कुछ तरीकों पर एक विस्तृत नजर डाली गई है, जिनसे ये संसाधन संरक्षित किए जा सकते हैं।

पानी की खपत कम करके : पृथ्वी पर पानी प्रचुरता में उपलब्ध है इसलिए लोग इसका उपयोग करने से पहले इसकी कम होती मात्रा की तरफ ज्यादा ध्यान देना जरुरत नहीं समझते। अगर हम पानी का इसी गति से उपयोग करते रहें तो निश्चित ही रूप से हमें भविष्य में गंभीर परिणाम भुगतना पड़ सकता हैं। पानी को बचने के लिए हम कुछ सरल चीजों को प्रयोग में ला सकते है जैसे ब्रश करने के दौरान नल को बंद करना, वॉशिंग मशीन में पानी का उपयोग कपड़ो की मात्रा के अनुसार करना तथा बचा हुआ पानी पौधों में देकर।

बिजली का उपयोग कम करके : बिजली की बचत कर के ही बिजली बनाई जा सकती है। इसीलिए बिजली के सीमित उपयोग को करने का सुझाव दिया जाता है। सिर्फ इतना ध्यान रखकर जैसे कि अपने कमरे से बाहर निकलने से पहले रोशनी को बंद करना, उपयोग के बाद बिजली के उपकरणों को बंद करना और फ्लोरो सेंट या एलईडी बल्बों को ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल में लाना आदि बिजली बचाने में एक महतवपूर्ण कदम हो सकता है।

कागज़ का सीमित उपयोग करके : कागज़ पेड़ से बनता है। अधिक कागज़ का प्रयोग करने से मतलब है कि वनों की कटाई को प्रोत्साहित करना जो आज के समय में चिंता का विषय है। हमें यह सुनिश्चित करने कि जरुरत है कि जितना आवश्यकता है उतना ही कागज़ का उपयोग करें। प्रिंट आउट लेना और ई-कॉपी का उपयोग करना बंद करना होगा।

नई कृषि पद्धतियों का उपयोग करें : सरकार को चाहिए की वह किसानों को मिश्रित फसल, फसल रोटेशन तथा कीटनाशकों, खाद, जैव उर्वरक और जैविक खाद के उचित उपयोग करने सिखाए।

जागरूकता फैलाए : प्रकृति के संरक्षण के बारे में जागरूकता फ़ैलाना तथा इसके लिए इस्तेमाल होनेवाली विधि खास तरीका अपना अति महत्वपूर्ण है। यह लक्ष्यत भी प्राप्त किया जा सकता है जब अधिक से अधिक लोग इसके महत्व को समझें और जिस भीतरी कैसे वे मदद कर सकते हैं करे।

इसके अलावा अधिक से अधिक पौधे लगाना भी बेहद जरुरी है। लोग यात्रा के लिए साझा परिवहन का उपयोग करके और प्रकृति के संरक्षण के लिए वर्षा जल संचय नप्रणाली को नियोजित कर के वायु प्रदूषण को कम करने की दिशा में अपना योगदान दे सकते है।

सी प्रविण ब्रगेट
सहायक श्रेणी-III(सामान्य)
मंडल कार्यालय, कोयम्बत्तूर

एस.भाग्यलक्ष्मी
सहायक श्रेणी-I (तकनीकी)
क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

सच्ची भक्ति

एक समय की बात है, एक गाँव में रघुदेव नाम का एक गरीब किसान रहता था। वह भगवान गणेश के बहुत बड़े भक्त थे। प्रतिदिन वह प्रसाद रखकर पूरे मन से पूजा करते थे, फिर भी उनकी दरिद्रता दूर नहीं हुई। लेकिन किसान को अपनी गरीबी की परवाह नहीं थी बल्कि उसे भगवान गणेश की कृपा न मिलने के कारण की चिंता थी। दिन बीत गए, प्रभु के प्रति उनकी प्रार्थना और प्रेम कम नहीं हुआ।

एक दिन रघुदेव प्रसाद और फूल चढ़ाकर पूजा कर रहे थे। उन्होंने देखा कि भगवान गणेश की मूर्ति के सामने अगरबत्ती जल रही थी और वे कल्पना करने लगे की कही अगरबत्ती से निकलने वाला का धुए से भगवान गणेश को स्वतंत्र रूप से सांस लेने में परेशानी न हो । इसलिए उन्होंने अगरबत्ती को थोड़ा अलग रख दिया। उस समय, भगवान गणेश किसान के सामने प्रकट हुए और उसे उसके कार्य के लिए आशीर्वाद दिया क्योंकि उसने मनुष्य के रूप में सोचकर भगवान की पूजा की थी, और किसान भगवान के दर्शन और आशीर्वाद पाकर बहुत खुश हुआ। उनकी गरीबी दूर हो गई और वे स्वास्थ्य और धन के साथ खुशी से रहने लगे।

शिक्षा : भगवान की भक्ति सच्चे मन से करनी चाहिए केवल दिखावे के लिए नहीं।

शुभम शंकर महाराणा
पुत्र श्रीमती मोनीसीला महाराणा
प्रबंधक (संचलन)
मं. का. श्रीकाकुलम

सुबोध कुमार चौपाल
स.श्रे-II(राजभाषा)
मं.का.शिवमोग्गा

अ.दिनेश प्रभु
सहायक श्रेणी.III
मंडल कार्यलय कोयम्बत्तूर

किस्मतों के हाथ

जिंदगी एक सौगात होती है,
खुशियों की बरसात होती है |
जो लागू जन्म के साथ होती है ,
पर गमों की बरसात साथ होती है |
जिंदगी में खुशियाँ और गम
दोनों साथ होती है |
ये तो अपनी अपनी बात होती है,
चुनने वाले किससे चुनता है
खुशियाँ या गम ,
ये तो किस्मतों के हाथ होती है |
पर जिंदगी में खुशियाँ और गम ,
दोनों साथ आती हैं |
चुनने बाले तो हमेशा
खुशियाँ ही चुनना चाहता है
पर मिले क्या खुशियाँ या गम
ये तो किस्मतों के हाथ होती है

माँ से बेटी तक

माँ की दोहरी कहानी, एक नयी रूप में,
माँ की मूरत, बेटी बन कर, बनी धुंधली सी।

पहले जो मुझे पाला, उसने प्यार से संभाला,
अब मेरी बेटी, मेरे साथ, जीने की राहों में बढ़ रही है बेहाला।
उसकी आँखों में माँ की मूरत,
मेरे जीवन की राह में उसका सहारा, सबसे मूल मेरी हर बात।
उसकी मुस्कान में पुराने सच्चाई का अनुभव,
उसके लहजे में वो माँ की ममता का रंग छाव।

उसके माध्यम से, मैं देखती हूँ एक नयी सुबह की रौशनी,
प्यार का चक्र, दिल को गर्म करने वाली अमर प्रेम की कहानी।

माँ से बेटी, एक कहानी जो हमेशा चली जाती है

हिन्दी को अपनाए बिना राष्ट्रीय एकता सम्भव नहीं है- आचार्य जे.बी कृपलानी

मनीष कुमार साव
सहायक श्रेणी III(राजभाषा)
क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

साहित्य सृजन में भारतीय अनुवाद की प्रक्रिया

विश्वभर में साहित्य सृजन के क्षेत्र में रचनात्मकता के लिए अनुवाद प्रक्रिया को एक सिरे से नकारा जाता रहा है। पाश्चात्यीकरण ने अनुवाद प्रक्रिया को केवल **दो भाषाई पाठों के रूपांतरण** के अर्थ में प्रस्तुत किया है। लेकिन हमारे देश भारत में अनुवाद को साहित्य सृजन के लिए आवश्यक माना गया है। भारत में आरंभिक साहित्य सृजन का आधार अनुवाद को माना जा सकता है। परन्तु, भारत देश में विद्यमान अनुवाद प्रक्रिया पाश्चात्य अनुवाद प्रक्रिया से भिन्न रही है।

भारत में अनुवाद के क्षेत्र में, इस प्रश्न का उत्तर पास होना, एक अनुवादक के लिए आवश्यक है कि, क्या हमारे देश भारत में अनुवाद की कोई भारतीय परंपरा रही है या नहीं...? आज हम जिस अनुवाद को अंग्रेजी भाषा के ट्रांसलेशन(TRANSLATION) शब्द के हिंदी पर्याय के रूप में देखते है, तो क्या आरंभ से ही हम अनुवाद को इसी अर्थ में ग्रहण करते आएं है...? आरंभ में ऐसा नहीं था, **हमारे देश भारत में अनुवाद की एक देशज प्रक्रिया थी, जिसमें पुनःनिर्माण का बोध समाहित था।**

अनुवाद की इस भारतीय प्रक्रिया मे, एक सहृदय रचयिता किसी पूर्ववर्ती रचना को उसके पूर्ण अर्थ में ग्रहण करता है और अपने **स्मृति-योग** का आधार लेकर अपने भाषा अधिकार में उसे पुनः प्रस्तुत करता है। स्रोत पाठ के अर्थ को पूर्ण रुप में ग्रहण करके उसे अपने भाषा अधिकार में लक्ष्य पाठ के रूप में प्रस्तुत करना अनुवाद प्रक्रिया का परिचय देता है, साथ ही इसमें **स्मृतियों का योग** इसे **भारतीय अनुवाद की देशज प्रक्रिया** के रूप में व्यक्त करती है।

आरंभिक भारतीय साहित्य अनुवाद की इस देशज प्रक्रिया में ही फलता-फूलता रहा है। साहित्य सृजन के क्षेत्र में कई आलोचक देशज अनुवाद को अनुकरण के रूप में देखते हैं, किन्तु इसे केवल अनुकरण मात्र समझना इसके संपूर्ण अर्थ को नहीं समझने के समान है। क्योंकि, अनुकरण में स्मृतियों का योग करने की

संभावना कम होती है। पुनः सृजन के लिए स्मृतियों के योग को समझना रचनात्मकता की पहली कसौटी है।

हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास दो-हजार वर्षों का इतिहास है, जिसमे हमें यह देखने को मिलता है कि, **किसी रचना में वैयक्तिक चिंतन का आधार केवल वह व्यक्ति नहीं है, जिसने उसकी रचना की है, बल्कि समाज से प्राप्त अनुभूतियों के साथ-साथ वह वर्तमान परिस्थितियाँ भी होती हैं, जिसमे वह व्यक्ति अपना जीवन जीता है।**

किसी भी रचना का आधार वह समाज होता है, जिस समाज में उस रचना का रचयिता उसकी रचना कर रहा होता है। किसी भी रचना के सृजन में वर्तमान समाज के उन परिस्थितियों का भी उतना ही योगदान होता है, जितना रचयिता के मानस का, रचनाकार का मानस भी समय की धारा में गोते लगाता रहता है। वह परिवर्तन की बात भी समय से प्राप्त अनुभूतियों के अनुरूप ही करता है। समय की धारा का सीधा संबंध परिवर्तित हो रही विचारधाराओं से है। इस तरह से किसी भी रचना के सृजन का सूत्र होता है- समाज, वर्तमान परिस्थितियाँ और रचनाकार का मानस एवं इन सभी का योग।

किसी काल विशेष की परिस्थितियाँ मानव-मन को इस हद तक प्रभावित करती हैं कि वह व्यक्ति अपने जीवन का आधार उसी परिस्थितियों के आधार पर ही गढ़ने लगता है। कई बार यह भी देखा गया है कि, जब भी कोई व्यक्ति अपने सोच का प्रत्यारोपन किसी अन्य पर करके अपनी भावनाओं का लोप करना चाहता है, तब वह केवल अपने भावनाओं का लोप नही करना चाहता है, बल्कि वह एक दर्शन का निर्माण करना चाह रहा होता है। यह जो दर्शन निर्मित होती है, इसमें स्मृतियों का परिमार्जन होता है एवं नई चेतना का प्रसार होता है।

व्यक्ति का यह स्वभाव है कि वह व्यष्टि से समष्टि की ओर गतिशील होता है। यह गतिशीलता उसे अपने विचारों के आदान-प्रदान का अवसर देती है। व्यक्ति अपने भाषाई क्षेत्र, तत्कालीन वर्तमान एवं अपनी सहजता के अनुरूप तथ्यों एवं प्रमाणों में हेर-फेर करता रहता है, अतः जब कोई **रचना** स्मृति का आधार लेकर लेखक से पाठक तक प्रेषित की जाती है, तब वह रचना वक्ता के जीवन प्रसंगों एवं उसके देश-काल की अनुभूतियों के अनुरूप ढलती हुई प्रेषित होती है।

साहित्य सृजन के लिए अनुवाद एवं भाषा के संबंध में, यह बात ध्यान देने योग्य है कि किसी रचना का भाषाई आधार उस भाषा को मानना चाहिए जिस भाषा में उस रचना का लेखन हुआ है! यह

उल्लेखित है कि, **किसी लोकग्राह्य कथा के लेखन परम्परा में विद्यमान होने के कारण एवं व्यक्ति की स्मृतियों का आधार प्राप्त होने के कारण उसके साहित्यिक प्रसंगों एवं संदर्भों का परिवर्तन होता रहा है।**

जब हम **रामकथा** की बात करते है तब यह पाते है कि, रामकथा का जो आदर्श स्वरुप लोक ग्राह्य है। वह किसी काल के दायरे में नहीं आ सकता है। इसलिए रामकथा की एक परंपरा हमें भारतीय साहित्य लेखन के आरंभिक समय से **"वाल्मीकि रामायण से लेकर तुलसी रचित रामचरितमानस, केशवदास की रामचंद्रिका से लेकर निराला की राम की शक्तिपूजा"** तक देखने को मिलती है। जिसमे हम यह देखते हैं कि किस तरह वाल्मीकि के राम तुलसी के यहाँ आकर **मर्यादापुरुषोत्तम राम** के रूप मे प्रकट होते हैं। एक ओर रीतिकाल में रामचंद्रिका में वर्णित रामकथा के माध्यम से केशवदास ने अनेक नये छंदों का उत्कृष्ट प्रयोग किया है। तो वहीं **राम की शक्तिपूजा** में निराला ने मानवीय रूप में आधुनिक जीवन-यथार्थ की बाधाओं को रामकथा के माध्यम से दर्शाया है।

रामकथा पर आधारित होने के बाद भी, इन सभी रचनाओं में जीवन प्रसंगों एवं देश-काल की अनुभूतियों के अनुरूप भिन्नता है। तुलसी के रामकथा में कई ऐसे प्रसंग है, जो वाल्मीकि रामायण से भिन्न है। इसका कारण यह है कि, तुलसी के समय में राम की जो कथा कही गयी है, उसमे राम को **मर्यादापुरुषोत्तम** के रूप में दर्शाया जाना आवश्यक था, क्योंकि यह समय की आवश्यकता थी। परवर्ती काल में रामकथा पर आधारित अनेक कृतियों की रचना हुई। यही कारण है कि वर्तमान समय में **रामायण** के अनेक ऐसे संस्करण मौजूद हैं, जिनमें कई प्रसंग मूल रामायण से भिन्न हैं।

साहित्य लेखन के क्षेत्र में किसी रचना का मूल्यांकन किसी काल विशेष की सीमाओं के अंतर्गत किया जाना एक परिपाटी सी बन गई है। लेकिन क्या हर रचना के कथानक को काल विशेष की सीमाओं में बांधा जा सकता है?... भारतीय लोक मानस में कुछ ऐसी कथाएं प्रचलित है जो किसी भी काल की सीमाओं से परे हैं। जब हम **रामकथा** और **कृष्णकथा** के लेखन परंपरा पर आधारित किसी रचना का उदहारण लेते हैं, तो हम यह पाते हैं कि, उसमें रचनाकार का **स्मृति-योग** एवं उसके देश-काल की अनुभूतियों का बोध सम्मिलित है जो उस रचना को उसके किसी पूर्ववर्ती रचना से अलग बना देती है। हिंदी साहित्य के सम्पूर्ण इतिहास से अगर लोकग्राह्य कथा पर आधारित किसी भी रचना को उदहारण स्वरुप लिया जाये तो यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि उस कथा की एक लेखन परंपरा रही है जिसमे भारतीय अनुवाद प्रक्रिया का स्वरूप भी विद्यमान रहा है।

(अनुवाद के संबंध में उपरोक्त विचार का आधार स्नातकोत्तर में पढ़े गए अनुवाद विज्ञान का पाठ्यक्रम है।)

विकाश प्रसाद बर्मन
सहायक श्रेणी II (राजभाषा)
मंडल कार्यालय, काकीनाड़ा

राजभाषा हिंदी की वर्तमान स्थिति एवं संघर्ष

हिंदी बहती नदी की धारा की तरह सब के लिए उपयोगी और कल्याणकारी रही है। अपनी पहचान के लिए हमें हर हाल में इस संबंध को समझना और जीना होगा।

हिंदी भाषा संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा और राजभाषा के रुप में भारत की पहचान बन चुकी है। वैसे तो हिंदी पूरे देश में समझी और बोली जाती है। लेकिन मुख्य तौर पर हिंदी पट्टी के राज्यों में यह भाषा आम बोलचाल, बाज़ार, व्यापार, राजनीति, पत्रकारिता, सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में संचार व संवाद का जरिया है।

स्वतंत्रता की लड़ाई के दौरान हिंदी भाषा राष्ट्रीयता की भावना बनकर पूरे जन समुदाय का प्रतिनिधित्व

किया। फिर स्वतंत्रता के बाद देश की अन्य 22 भाषाओं को साथ-साथ राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान करने वाली भाषाओं के रूप में संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान दिया गया।

सरकारी कामकाज के माध्यम के रूप में हिंदी को भारत संघ द्वारा एवं हिंदी प्रदेशों द्वारा अपनाया गया है। इस रुप में हिंदी बतौर राजभाषा का दर्जा रखती है। किंतु विचारणीय यह है कि हम आज़ादी के बाद हिंदी को राजभाषा के रूप में जितनी विकास होना चाहिये उतनी हुई या पिछड़ गई।

हिंदी भाषा को लेकर संवैधानिक स्थिति

संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के रुप में हिंदी की स्थिति को बताया गया है। बता दें कि संविधान सभा ने काफी विचार विमर्श करने के बाद 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा का दर्जा दिया। अनुच्छेद 343 (1) में देवनागरी लिपि लिखी जानेवाली हिंदी को संघ की राजभाषा कहा गया है, साथ ही प्रारंभ के 15 वर्षों तक अंग्रेज़ी के प्रयोग को भी सभी शासकीय कार्यों के लिए मान्यता दी गई।

अनुच्छेद 344 के अनुसार प्रत्येक पाँच वर्ष के पश्चात् राष्ट्रपति एक भाषा आयोग की नियुक्ति करेंगे। वह आयोग हिंदी का उत्तरोत्तर अधिक प्रयोग करने और अंग्रेज़ी का प्रयोग घटाने की सिफ़ारिश करेगा। अनुच्छेद 345, 346, 347 के अनुसार दो प्रदेशों के बीच अथवा एक प्रदेश और संघ के बीच संवाद विनिमय के लिए अंग्रेज़ी अथवा हिंदी का और परस्पर समझौते से केवल हिंदी का प्रयोग किया जा सकेगा। किसी राज्य की विधानसभा विधि द्वारा अपने प्रदेश की भाषा को मान्यता प्रदान कर सकेगी। यदि कोई राज्य अंग्रेजी को जारी नहीं रखना चाहता तो विधि द्वारा उस प्रदेश की भाषा राजभाषा हो जाएगी। उच्च न्यायालय तथा उच्चतम न्यायालय की भाषा अंग्रेज़ी होगी किंतु राष्ट्रपति या राज्यपाल की पूर्व सम्मति से हिंदी अथवा उस राज्य की भाषा का प्रयोग उच्च न्यायालय की कार्यवाही के लिए प्राधिकृत किया जा सकेगा।

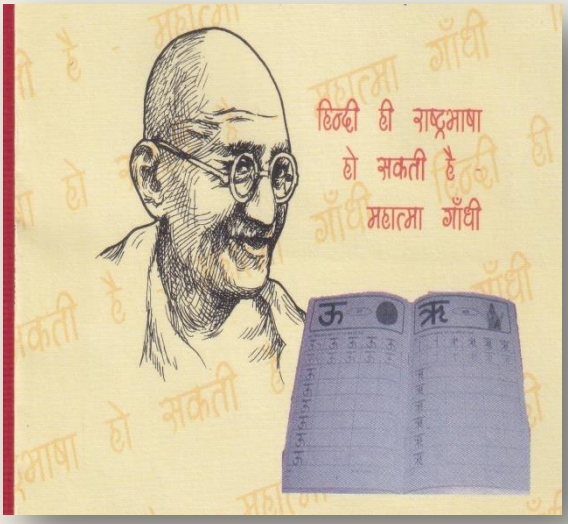

राजकीय प्रयोजनों में हिंदी के विकास के लिए अनुच्छेद 351 का विशेष महत्व है। संघ को यह कार्य 15 वर्षों में कर लेना चाहिए था किंतु राजनीतिक इच्छा के अभाव में छह दशकों के बाद भी संघ अपने कर्तव्य को बहुत कम पूरा कर पाया है। राजभाषा अधिनियम 1967 के द्वारा अंग्रेज़ी के प्रयोग को अनिश्चित समय तक जारी रखने का उपबंध भी किया गया है जिसके फलस्वरूप अब कोई प्रदेश तक चाहेगा, अंग्रेजी को भी संघ की राजभाषा के रूप में अपनाता रह सकेगा। इस प्रावधान से अब मिज़ोरम, नगालैंड आदि प्रदेश जिन्होंने अपनी प्रादेशिक भाषा ही अंग्रेजी अपना रखी है, हिंदी से जुड़ने की इच्छा शक्ति खत्म कर चुके हैं।

हिंदी की वर्तमान स्थिति

संघीय स्तर पर राजभाषा के रूप में अंग्रेज़ी का वर्चस्व आज भी कायम है। अंग्रेज़ी आज दक्षिण भाषा-भाषियों के विरोध के कारण ही नहीं, बल्कि प्रशासकों एवं समाज के उच्च वर्ग के अपने निहित स्वार्थ के कारण, राजकाज के स्तर पर, उच्च शिक्षा के स्तर पर छाई हुई है। जब तक अंग्रेज़ी के साथ प्रतिष्ठा, सत्ता, नौकरी और पैसा जुड़ा रहेगा तब तक लोगों से यह अपेक्षा करना कि वे अपने बच्चों को अंग्रेज़ी न पढ़ाएँ, एक तथ्य को अनदेखा करना होगा।

गाँधी जी ने अंग्रेज़ी के इस मोह से पिंड छुड़ाना 'स्वराज' का अनिवार्य अंग माना था, किंतु देश की विडंबना है कि वह इस मोह से छूटने की बजाय दिन-प्रतिदिन उसमें जकड़ता जा रहा है। अंग्रेज़ी के 3 फीसदी लोग, हिंदी के 44 फीसदी लोगों पर हावी हैं। अतः न केवल राजनीतिक निर्णय के रूप में बल्कि आम जनता के भावात्मक एवं बौद्धिक विकास की दृष्टि से हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में पूरे देश में सभी प्रादेशिक सरकारों द्वारा अंगीकार करना चाहिए।

प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को सरकारी कार्यालय प्रायः हिंदी दिवस, सप्ताह, पखवाड़ा या मास का आयोजन करते हैं किंतु जितनी निष्ठा से हिंदी को अपनाने पर बल देना चाहिए वह नहीं करते। राजभाषा के रूप में कभी हम अंग्रेज़ी के अनुवाद बहुत जटिल कर बैठते हैं, कभी वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित तकनीकी शब्दों का प्रयोग नहीं करके भ्रम फैलाते हैं, कभी हिंदी के शब्द-कोश, टंकण, कंप्यूटर आदि खरीदने में शिथिलता बरतते हैं, कभी अंग्रेज़ी का जो ढर्रा चला आ रहा है उसे बदलने में संकोच या आलस करते हैं।

दरअसल हर सरकारी कर्मचारी यदि अपने राष्ट्रीय एवं भाषाई बोध से गर्वित होकर कष्ट उठाकर भी

हिंदी को अपनाने का संकल्प कर ले तो राजभाषा के रूप में हिंदी का शत-प्रतिशत व्यवहार संभव हो सकता है । हम संकल्प लें और करें अन्य कोई उपाय नहीं है। यह जानते हुए भी कि हिंदी को भारत की पहचान के लिए जीवित रहना ही नहीं मुखर रहना भी आवश्यक है।

अपनी पहचान के लिए हमें हर हाल में, इस संबंध को समझना और जीना होगा। बिना इसके भारतीयता का कोई अर्थ नहीं रह जाता। हिंदी बहती नदी की धारा की तरह सब के लिए उपयोगी और कल्याणकारी रही है। यही कारण है कि गैर हिंदी भाषा भाषी क्षेत्रों के हिंदी उन्नायकों ने हिंदी को जन भाषा के रूप में स्वीकार करते हुए इसके उत्थान के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

वह चाहे गुजराती भाषा भाषी महर्षि दयानंद और गांधी रहे हों, बंगाल के राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन और रवींद्रनाथ टैगोर तथा नेता सुभाष रहे हों या महाराष्ट्र के नामदेव, गोखले और रानाडे रहे हों। इसी तरह तमिलनाडु के सुब्रह्मण्यम भारती, पंजाब के लाला लाजपत राय, आंध्र प्रदेश के प्रो. जी. सुंदर रेड्डी जैसे अनेक अहिंदी भाषा भाषी क्षेत्रों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए।

दिनांक 13.07.2023 को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा मंडल कार्यालय मैसूरु एवं शिवमोग्गा के राजभाषायी निरीक्षण की झलकियां

दिनांक 23.08.2023 को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय अमरावती एवं मंडल कार्यालय विजयवाडा के राजभाषायी निरीक्षण की झलकियां

दिनांक 25.08.2023 को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा मंडल कार्यालय काकीनाडा के राजभाषायी निरीक्षण की झलकियां

हिंदी कार्यशाला 2023-24 की झलकियां

आंचलिक कार्यालय(द), चेन्नई

आंचलिक कार्यालय(द), चेन्नई

क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

मंडल कार्यालय, चेन्नई

मंडल कार्यालय,वेलूर

मंडल कार्यालय,कोयम्बत्तूर

मंडल कार्यालय,कडलूर

मंडल कार्यालय,तजांऊर

मंडल कार्यालय,तूतिकोरिन

क्षेत्रीय कार्यालय,बेंगलूरु

मंडल कार्यालय,बेंगलूरु

मंडल कार्यालय, मैसूर

मंडल कार्यालय,शिमोगा

मंडल कार्यालय, हुब्बली

मंडल कार्यालय, रायचूर

क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद

मंडल कार्यालय,तारनाका

मंडल कार्यालय,सनतनगर

मंडल कार्यालय,वरंगल

मंडल कार्यालय,निजामाबाद

मंडल कार्यालय,नालगोंडा

मंडल कार्यालय,खम्मम

मंडल कार्यालय, करीमनगर

क्षेत्रीय कार्यालय,अमरावती

मंडल कार्यालय,विजयावाड़ा

मंडल कार्यालय, श्रीकाकुलम

मंडल कार्यालय,काकीनाड़ा

मंडल कार्यालय,विशाखापट्टनम

मंडल कार्यालय, कर्नूल

मंडल कार्यालय,नेल्लूर

मंडल कार्यालय, ताड़ेपल्लिगूडेम

मंडल कार्यालय,पोर्टब्लेयर

क्षेत्रीय कार्यालय,तिरूवनंतपुरम

मंडल कार्यालय, तिरूवनंततपुरम

मंडल कार्यालय, कोच्ची

मंडल कार्यालय, अलप्पुषा

मंडल कार्यालय, कोट्टयम

मंडल कार्यालय, कोषिकोड

मंडल कार्यालय, पालक्कड़

मंडल कार्यालय, कन्नूर

हिंदी में प्रवीणता

किसी कर्मचारी के बारे में यह समझा जाएगा कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है यदि उसने-

(क) मैट्रिक परीक्षा या उसके समकक्ष या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिंदी को माध्यम के रूप में अपनाकर उत्तीर्ण की है; अथवा

(ख) स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा के समकक्ष या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को उसने एख वैकल्पिक विषय के रूप मे लिया था; अथवा

(ग) वह यह घोषणा करता है कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है।

आंचलिक कार्यालय(द), चेन्नई की गतिविधियां

नराकास (उप.) चेन्नई द्वारा आयोजित नाटक प्रतियोगिता में आंचलिक कार्यालय(द) चेन्नई को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

आंचलिक कार्यलय(द) चेन्नई द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा 2024 का सफलतापूर्वक आयोजन

आंचलिक कार्यालय (द), चेन्नई द्वारा पोषण पखवाड़ा 2024 का आयोजन

श्री हरीश सिंह चौहान, उप निदेशक(द), राजभाषा विभाग कोच्ची द्वारा दिनांक 08.01.2024 को आंचलिक कार्यलय (द) चेन्नई का राजभाषा संबंधी निरीक्षण।

16.02.2024 को आंचलिक कार्यालय (द), चेन्नई द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन

14 एवं 15 मार्च 2024 को पुडुचेरी में आंचलिक राजभाषा सेमिनार का आयोजन